गुरु तेग बहादर जी की वाणी

प्रो. साहिब सिंह द्वारा पंजाबी अनुवाद पर आधारित हिंदी अनुवाद सहित

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

ईश्वर एक है और सतगुरु की कृपा से मिलता है।

रागु गउड़ी महला ९ ॥

राग गउड़ी में गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

साधो मन का मानु तिआगउ ॥

हे संत जनो! (अपने) मन का अहंकार छोड़ दो।

कामु क्रोधु संगति दुरजन की ता ते अहिनिसि भागउ ॥१॥ रहाउ ॥

काम और क्रोध (भी) बुरे मनुष्य की संगति (जैसी ही) है, इस से (भी) दिन रात (हर वक़्त) परे रहो ॥१॥ विराम॥

सुखु दुखु दोनो सम करि जानै अउरु मानु अपमाना ॥

(हे संत जनो! जो) मनुष्य सुख और दुख दोनों को एक जैसा जानता है, और जो आदर और अपमान को (भी) एक समान जानता है। (कोई मनुष्य उसका आदर करें तो भी परवाह नहीं, यदि कोई उसका निरादर करें तो भी परवाह नहीं),

हरख सोग ते रहै अतीता तिनि जगि ततु पछाना ॥१॥

और जो मनुष्य ख़ुशी और ग़म दोनों से विलग रहता है (खुशी के वक़्त अहंकार में नहीं आता और ग़म के वक़्त घबराता नहीं) उसने जगत में जीवन का भेद समझ लिया है ॥१॥

उसतति निंदा दोऊ तिआगै खोजै पदु निरबाना ॥

(हे संत जनो! उस मनुष्य ने असलियत ढूंढ़ ली है जो) न तो किसी की खुशामद करता है न किसी की निंदा करता है, और जो उस आत्मिक अवस्था की हमेशा खोज करता है जहाँ कोई वासना पहुँच नहीं सकती।

जन नानक इहु खेलु कठनु है किनहूं गुरमुखि जाना ॥२॥१॥

(पर) हे नानक! यह (जीवन-) खेल (खेलना) कठिन है। कोई विरला मनुष्य गुरु की शरण लेकर इसे समझता है ॥२॥१॥

गउड़ी महला ९ ॥

राग गउड़ी में गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

साधो रचना राम बनाई ॥

हे संत जनो! परमात्मा ने (जगत की यह आश्चर्यजनक) रचना कर दी है,

इकि बिनसै इक असथिरु मानै अचरजु लखिओ न जाई ॥१॥ रहाउ ॥

(कि) एक मनुष्य (तो) मरता है (पर) दूसरा मनुष्य (उसको मरते देखकर भी अपने आप को) सदा टिका रहने वाला समझता है। यह एक आश्चर्यजनक तमाशा है जो बयान नहीं किया जा सकता ॥१॥ विराम ॥

काम क्रोध मोह बसि प्रानी हरि मूरति बिसराई ॥

(हे संत जनो!) मनुष्य काम, क्रोध और मोह के कब्जे में आता रहता है और परमात्मा की अस्तित्व को भुला रखता है।

झूठा तनु साचा करि मानिओ जिउ सुपना रैनाई ॥१॥

यह शरीर सदा साथ रहने वाला नहीं है, पर मनुष्य इसको सदा कायम रहने वाला समझता है, जैसे रात के समय (सोने के दौरान जो) सपना (आता है मनुष्य नींद की स्थिति में उस सपने को असली हो रही बात समझता है) ॥१॥

जो दीसै सो सगल बिनासै जिउ बादर की छाई ॥

(हे संत जनो!) जैसे बादल की छांव (सदा एक जगह टिकी नहीं रह सकती, वैसे) जो कुछ (जगत में) दिख रहा है यह सब कुछ (अपने-अपने समय में) नाश हो जाता है।

जन नानक जगु जानिओ मिथिआ रहिओ राम सरनाई ॥२॥२॥

हे दास नानक! (जिस मनुष्य ने) जगत को नाशवान समझ लिया है, वह (सदा-ठहरने वाले) परमात्मा की शरण में लगा रहता है ॥२॥२॥

गउड़ी महला ९ ॥

राग गउड़ी में गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

प्रानी कउ हरि जसु मनि नही आवै ॥

(हे मनुष्य!) मनुष्य को परमात्मा की महिमा (अपने) मन में (बसाना) नहीं आता।

अहिनिसि मगनु रहै माइआ मै कहु कैसे गुन गावै ॥१॥ रहाउ ॥

(हे मनुष्य!) बता कि वह मनुष्य कैसे परमात्मा के गुण गा सकता है जो दिन-रात माया के मोह में मस्त रहता है? ॥१॥ विराम ॥

पूत मीत माइआ ममता सिउ इह बिधि आपु बंधावै ॥

(हे मनुष्य! माया के मोह में मस्त रहने वाला मनुष्य) पुत्र, मित्र, माया आदि के मोह से बंधा रहता है, और इस तरह अपने आपको (मोह के बंधनों में) बांध रखता है।

म्रिग त्रिसना जिउ झूठो इहु जग देखि तासि उठि धावै ॥१॥

(माया-ग्रस्त मानव यह नहीं समझता कि) यह जगत तो ठग-नीरे की तरह (ठगी ही ठगी है, जैसे हिरन ठगनीरे को देखकर उसकी ओर दौड़ता और भटक-भटक कर मरता है, वैसे ही मनुष्य इस जगत को) देखकर इस ओर (सदा) दौड़ता रहता है (और आत्मिक मृत्यु सहन करता है) ॥१॥

भुगति मुकति का कारनु सुआमी मूड़ ताहि बिसरावै ॥

मूर्ख मनुष्य उस मालिक-प्रभु को भुला देता है जो दुनिया के मौजों और सुखों का भी मालिक है और जो मोक्ष भी देने वाला है।

जन नानक कोटन मै कोऊ भजनु राम को पावै ॥२॥३॥

हे दास नानक! (आखिर) करोड़ों में से कोई विरला मनुष्य होता है जो (जगत ठग-नीरे के मोह से बचकर) परमात्मा की भक्ति प्राप्त करता है ॥२॥३॥

गउड़ी महला ९ ॥

राग गउड़ी में गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

साधो इहु मनु गहिओ न जाई ॥

हे संत जनों! यह मन वश में किया नहीं जा सकता,

चंचल त्रिसना संगि बसतु है या ते थिरु न रहाई ॥१॥ रहाउ ॥

(क्योंकि यह मन सदा) अनेक स्नेह करने वाली तृष्णा के साथ निवास करता रहता है, इसलिए यह कभी स्थिर नहीं रहता ॥१॥ विराम॥

कठन करोध घट ही के भीतरि जिह सुधि सभ बिसराई ॥

(हे संत जनों!) वश में न आ सकने वाला क्रोध भी इसी हृदय में निवास करता है, जिसने (मनुष्य को अच्छी तरफ की) सारी होश भुला दी है।

रतनु गिआनु सभ को हिरि लीना ता सिउ कछु न बसाई ॥१॥

(क्रोध ने) प्रत्येक मनुष्य का श्रेष्ठ ज्ञान चुरा लिया है, उसके कारण किसी की कोई कोशिश नहीं चलती ॥१॥

जोगी जतन करत सभि हारे गुनी रहे गुन गाई ॥

सभी योगी (इस मन को काबू करने के) प्रयास करते-करते थक गए, विद्यावान मनुष्य अपनी विद्या की प्रशंसा करते थक गए (न तो योग-साधन, न ही विद्या मन को कोई भी वश में लाने के समर्थ हैं)।

जन नानक हरि भए दइआला तउ सभ बिधि बनि आई ॥२॥४॥

हे दास नानक! जब प्रभु जी दयावान होते हैं, तब (इस मन को काबू में रखने के) सारे ढोंग सही हो जाते हैं ॥२॥४॥

गउड़ी महला ९ ॥

राग गउड़ी में गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

साधो गोबिंद के गुन गावउ ॥

हे संत जनों! (सदा) गोबिंद के गुण गाते रहा करो।

मानस जनमु अमोलकु पाइओ बिरथा काहि गवावउ ॥१॥ रहाउ ॥

यह बड़ा कीमती मनुष्य जन्म मिला है, इसे व्यर्थ क्यों गवाते हो? ॥१॥ विराम॥

पतित पुनीत दीन बंध हरि सरनि ताहि तुम आवउ ॥

(हे संत जनों!) परमात्मा उन मनुष्यों को भी पवित्र करने वाला है जो विकारों में डिगे हुए होते हैं, वह हरी गरीबों का सहाई है। तुम भी उसी की शरण लें।

गज को त्रासु मिटिओ जिह सिमरत तुम काहे बिसरावउ ॥१॥

जिस का स्मरण कर के हाथी का डर मिट गया था, तुम उसे क्यों भुला रहे हो? ॥१॥

तजि अभिमान मोह माइआ फुनि भजन राम चितु लावउ ॥

(हे संत जनों!) अहंकार दूर कर के और माया का मोह दूर कर के अपना चित्त परमात्मा के भजन में लगा कर रखो!

नानक कहत मुकति पंथ इहु गुरमुखि होइ तुम पावउ ॥२॥५॥

नानक कहता है: विकारों से छूटने का यही रास्ता है, पर गुरु की शरण में जाकर ही तुम यह रास्ता खोज सकोगे ॥२॥५॥

गउड़ी महला ९ ॥

राग गउड़ी में गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

कोऊ माई भूलिओ मनु समझावै ॥

हे (मेरी) माँ! (माया के मोह से भरे हुए संसार-जंगल में मेरा मन कठिनाई में पड़ा है, मुझे) कोई (ऐसा गुरु मिल जाये जो मेरे इस) कष्ट में पड़े हुए मन को समझा दे।

बेद पुरान साध मग सुनि करि निमख न हरि गुन गावै ॥१॥ रहाउ ॥

(यह भुला हुआ मन) वेद पुराण (आदि धार्मिक ग्रंथ और) संत जनों के उपदेश सुनकर मात्र एक क्षण के लिए भी परमात्मा के गुण नहीं गाता ॥१॥ विराम॥

दुरलभ देह पाइ मानस की बिरथा जनमु सिरावै ॥

(हे मेरी माँ! यह मन ऐसा कठिनाई में पड़ा है कि) बड़ी मुश्किल से मिल सकने वाला मानव शरीर प्राप्त कर के (भी) इस जन्म को व्यर्थ गुजार रहा है।

माइआ मोह महा संकट बन ता सिउ रुच उपजावै ॥१॥

(हे माँ! यह संसार-जंगल) माया के मोह से लबालब भरा हुआ है (और मेरा मन) इस (जंगल के साथ ही) प्रेम बना रहा है ॥१॥

अंतरि बाहरि सदा संगि प्रभु ता सिउ नेहु न लावै ॥

(हे मेरी माँ! जो) परमात्मा (हर जीव के) अंदर और बाहर हर समय निवास करता है, उसके साथ (यह मेरा मन) प्रेम नहीं कर पा रहा।

नानक मुकति ताहि तुम मानहु जिह घटि रामु समावै ॥२॥६॥

हे नानक! (कह: माया के मोह से भरे हुए संसार-जंगल से) तुम उसी मानव को मुक्ति (मिलती) समझो, जिस के हृदय में परमात्मा निवास कर रहा है ॥२॥६॥

गउड़ी महला ९ ॥

राग गउड़ी में गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

साधो राम सरनि बिसरामा ॥

हे संत जनों! परमात्मा की शरण पाकर ही (विकारों में भटकने से) शांति प्राप्त होती है।

बेद पुरान पड़े को इह गुन सिमरे हरि को नामा ॥१॥ रहाउ ॥

वेद पुराण (आदि धर्म-पुस्तकें) पढ़ने का यही लाभ (होना चाहिए) है कि मनुष्य परमात्मा का नाम स्मरण करता रहे॥१॥ विराम॥

लोभ मोह माइआ ममता फुनि अउ बिखिअन की सेवा ॥

(हे संत जनों!) लोभ, माया का मोह, अपनापन और विषयों का सेवन,

हरख सोग परसै जिह नाहनि सो मूरति है देवा ॥१॥

जिस मनुष्य को खुशी या ग़म (में से कोई भी) छू नहीं सकती (जिस मनुष्य पर यह अपना जोर नहीं पा सकती) वह मनुष्य परमात्मा का रूप है॥१॥

सुरग नरक अम्रित बिखु ए सभ तिउ कंचन अरु पैसा ॥

(हे संत जनों! वह मनुष्य परमात्मा का रूप है जिसे) स्वर्ग और नरक अमृत और ज़हर एक-जैसे लगते हैं, जिसे सोना और तांबा एक समान प्रतीत होता है,

उसतति निंदा ए सम जा कै लोभु मोहु फुनि तैसा ॥२॥

जिसके हृदय में स्तुति और निंदा भी एक-जैसी हैं (कोई उसकी प्रशंसा करें, कोई उसकी निंदा करें - उसे यह एक समान हैं), जिसके हृदय में लोभ भी प्रभाव नहीं डाल सकता, मोह भी प्रभाव नहीं डाल सकता ॥२॥

दुखु सुखु ए बाधे जिह नाहनि तिह तुम जानउ गिआनी ॥

(हे संत जनों!) तुम उस मनुष्य को परमात्मा के साथ गहरी जान-पहचान रखने वाला समझो, जिसको न तो कोई दुःख और न कोई सुख (अपने प्रभाव में) बाँध सकता।

नानक मुकति ताहि तुम मानउ इह बिधि को जो प्रानी ॥३॥७॥

हे नानक! (आँख: हे संत जनों! लोभ, मोह, दुःख सुख आदि से) उस मनुष्य को मुक्ति मिली मानो, जो मनुष्य इस किस्म की जीवन-जीविका वाला है ॥३॥१॥

गउड़ी महला ९ ॥

राग गउड़ी में गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

मन रे कहा भइओ तै बउरा ॥

हे (मेरे) मन! तू कहाँ (लोभ आदि में फंसकर) पागल हो रहा है?

अहिनिसि अउध घटै नही जानै भइओ लोभ संगि हउरा ॥१॥ रहाउ ॥

(हे मनुष्य!) दिन-रात उम्र घटती रहती है, पर मनुष्य यह बात समझता नहीं और लोभ में फंसकर कमजोर आत्मिक जीवन वाला बनता जाता है ॥१॥ विराम॥

जो तनु तै अपनो करि मानिओ अरु सुंदर ग्रिह नारी ॥

हे (मेरे) मन! जो यह शरीर तू अपना कर समझ रहा है और घर की सुंदर पत्नी को अपनी मान रहा है,

इन मैं कछु तेरो रे नाहनि देखो सोच बिचारी ॥१॥

इन में से कोई भी तेरा (सदा निभाने वाला साथी) नहीं है, सोच कर देख ले, विचार कर देख ले ॥१॥

रतन जनमु अपनो तै हारिओ गोबिंद गति नही जानी ॥

हे (मेरे) मन! जैसे जुआरी जुआ में बाजी हारता है, वैसे) तू अपना कीमती मानव जन्म हार रहा है, क्योंकि तू परमात्मा के मिलाप की अवस्था की कदर नहीं पाता।

निमख न लीन भइओ चरनन सिंउ बिरथा अउध सिरानी ॥२॥

तू रता भर समय के लिए भी गोबिंद-प्रभू के चरणों में नहीं जुड़ता, तू व्यर्थ उम्र गुजार रहा है ॥२॥

कहु नानक सोई नरु सुखीआ राम नाम गुन गावै ॥

नानक कहता है कि वही मनुष्य सुखी जीवन वाला है जो परमात्मा का नाम जपता है और परमात्मा के गुण गाता है।

अउर सगल जगु माइआ मोहिआ निरभै पदु नही पावै ॥३॥८॥

बाकी का सारा जहान (जो) माया के मोह में फंसा रहता है (वह सहमा रहता है, वह) उस आत्मिक अवस्था पर नहीं पहुँचता, जहाँ कोई डर पहुँच नहीं सकता ॥३॥८॥

गउड़ी महला ९ ॥

राग गउड़ी में गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

नर अचेत पाप ते डरु रे ॥

हे गाफ़िल मनुष्य! पापों से बचा रहो,

दीन दइआल सगल भै भंजन सरनि ताहि तुम परु रे ॥१॥ रहाउ ॥

(और इन पापों से बचने के लिए) उस परमात्मा की शरण में रहो, जो गरीबों पर दया करने वाला है और सारे डर दूर करने वाला है ॥१॥ विराम॥

बेद पुरान जास गुन गावत ता को नामु हीऐ मो धरु रे ॥

(हे गाफ़िल मनुष्य!) उस परमात्मा का नाम अपने नाम हृदय में बसा रखना, जिसके गुण वेद-पुराण (आदि धर्म-पुस्तकें) गा रही हैं।

पावन नामु जगति मै हरि को सिमरि सिमरि कसमल सभ हरु रे ॥१॥

(हे गाफ़िल मनुष्य! पापों से बचा कर) पवित्र करने वाला जगत में परमात्मा का नाम (ही) है, तुम उस परमात्मा को स्मरण कर करके (अपने अंदर से) सारे पाप दूर कर लो ॥१॥

मानस देह बहुरि नह पावै कछू उपाउ मुकति का करु रे ॥

(हे गाफ़िल मनुष्य!) तुम यह मनुष्य शरीर फिर कभी नहीं पाएंगे (इसको क्यों पापों में लगकर खो रहे हो? यही समय है। इन पापों से) खलासी प्राप्त करने का कोई इलाज कर लो।

नानक कहत गाइ करुना मै भव सागर कै पारि उतरु रे ॥२॥९॥२५१॥

तुम्हें नानक कहता है कि तरस-रूप परमात्मा के गुण गा करके संसार-समुंदर से पार निकल जाओ
॥२॥९॥२५१॥

Page 411

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

ईश्वर एक है और सतगुरु की कृपा से मिलता है।

रागु आसा महला ९ ॥

राग आसा में गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

बिरथा कहउ कउन सिउ मन की ॥

मैं इस (मानव) मन की भयानक अवस्था किसको बताऊं,

लोभि ग्रसिओ दस हू दिस धावत आसा लागिओ धन की ॥१॥ रहाउ ॥

(हर एक मनुष्य की यही स्थिति है), लोभ में फंसा हुआ यह मन दस तरफ में दौड़ता रहता है, इसे धन जोड़ने की तृष्णा लगी रहती है ॥१॥ विराम॥

सुख कै हेति बहुतु दुखु पावत सेव करत जन जन की ॥

सुख हासिल करने के लिए (यह मन) हर एक की खुशामद करता फिरता है और (इस तरह सुख के बजाय) दुःख सहता है।

दुआरहि दुआरि सुआन जिउ डोलत नह सुध राम भजन की ॥१॥

कुत्ते की तरह हर एक के दर पर भटकता फिरता है, इसे परमात्मा का भजन करने की कभी सूझ ही नहीं पड़ती ॥१॥

मानस जनम अकारथ खोवत लाज न लोक हसन की ॥

(लोभ में फंसा हुआ) यह जीव अपना मानव जन्म व्यर्थ ही गवा देता है, (इस के लालच के कारण) लोगों द्वारा हो रहे हँसी-मजाक पर भी इसको शर्म नहीं आती।

नानक हरि जसु किउ नही गावत कुमति बिनासै तन की ॥२॥१॥२३३॥

हे नानक! (कह: हे जीव!) तू परमात्मा की स्तुति-प्रशंसा क्यों नहीं करता? (महिमा के वरदान से ही) तेरी यह बुरी मत दूर हो सकेगी ॥२॥१॥२३३॥

Page 536

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

ईश्वर एक है और सतगुरु की कृपा से मिलता है।

रागु देवगंधारी महला ९ ॥

राग देवगंधारी में गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

यह मनु नैक न कहिओ करै ॥

यह मन क्षण भर भी मेरा कहा नहीं मानता।

सीख सिखाइ रहिओ अपनी सी दुरमति ते न टरै ॥१॥ रहाउ ॥

मैं अपने द्वारा इसे शिक्षा दे देकर थक गया हूँ, फिर भी यह बुरे खयालों से हटता नहीं ॥१॥ विराम॥

मदि माइआ कै भइओ बावरो हरि जसु नहि उचरै ॥

माया के नशे में यह मन पागल हुआ पड़ा है, कभी यह परमात्मा की महिमा की वाणी नहीं उचारता,

करि परपंचु जगत कउ डहकै अपनो उदरु भरै ॥१॥

दिखावा करके दुनिया को ठगता रहता है, और (ठगी से इकट्ठा किए धन के साधन से) अपना पेट भरता रहता है ॥१॥

सुआन पूछ जिउ होइ न सूधो कहिओ न कान धरै ॥

कुत्ते की पूंछ की तरह यह मन कभी भी सीधा नहीं होता, (किसी की भी) दी हुई शिक्षा को ध्यान से नहीं सुनता।

कहु नानक भजु राम नाम नित जा ते काजु सरै ॥२॥१॥

हे नानक, कह! रोज परमात्मा के नाम का भजन किया कर, जिस के कारण तेरा जन्म-उद्देश्य हल हो जाए ॥२॥१॥

देवगंधारी महला ९ ॥

राग देवगंधारी में गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

सभ किछु जीवत को बिवहार ॥

यह सब कुछ जीवित होने का ही मेल है,

मात पिता भाई सुत बंधप अरु फुनि ग्रिह की नारि ॥१॥ रहाउ ॥

माँ, पिता, भाई, पुत्र, रिश्तेदार और घर की बहु भी ॥१॥ विराम॥

तन ते प्रान होत जब निआरे टेरत प्रेति पुकारि ॥

(मौत आने पर) जब आत्मा शरीर से अलग हो जाती है, तो (ये सभी रिश्तेदार) ऊँचे-ऊँचे बोलने लगते हैं कि यह मर चुका है, मर चुका है।

आध घरी कोऊ नहि राखै घर ते देत निकारि ॥१॥

कोई भी रिश्तेदार आधी घड़ी के लिए भी (उसे) घर में नहीं रखता, घर से निकाल देते हैं ॥१॥

म्रिग त्रिसना जिउ जग रचना यह देखहु रिदै बिचारि ॥

अपने हृदय में विचार करके देख लो, यह जगत-खेल ठग-नीरे की तरह है (जैसे प्यासा हिरण मरुस्थल में पानी पीछे दौड़ने पर धोखा खाता है, मनुष्य भी माया के पीछे दौड़-दौड़ कर आत्मिक मौत मर जाता है)।

कहु नानक भजु राम नाम नित जा ते होत उधार ॥२॥२॥

नानक कहता है कि सदा परमात्मा के नाम का भजन करते रहो, जिसके वरदान से (संसार के मोह से) पार उतरना होता है॥२॥२॥

देवगंधारी महला ९ ॥

राग देवगंधारी में गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

जगत मै झूठी देखी प्रीति ॥

दुनिया में (रिश्तों का) प्यार मैंने झूठा ही देखा है।

अपने ही सुख सिउ सभ लागे किआ दारा किआ मीत ॥१॥ रहाउ ॥

चाहे यह स्त्री है या मित्र हैं - सभी अपने सुख की खातिर ही (मनुष्य के) साथ चलते फिरते हैं ॥१॥ विराम॥

मेरउ मेरउ सभै कहत है हित सिउ बाधिओ चीत ॥

हर कोई यही कहता है 'यह मेरा है, यह मेरा है', क्योंकि चित्त मोह के साथ बंधा होता है।

अंति कालि संगी नह कोऊ इह अचरज है रीति ॥१॥

पर आखिरी समय में कोई भी साथी नहीं बनता। (जगत की) यह अचरज मर्यादा चलती आ रही है ॥१॥

मन मूरख अजहू नह समझत सिख दै हारिओ नीत ॥

हे मूर्ख मन! तुझे मैंने हमेशा सिखाया है, मैं थक गया हूँ, तू अभी भी समझ नहीं करता।

नानक भउजलु पारि परै जउ गावै प्रभ के गीत ॥२॥३॥६॥३८॥४७॥

हे नानक, कह कि जब मनुष्य परमात्मा की स्तुति-प्रशंसा के गीत गाता है, तब वह संसार-सागर से पार चला जाता है ॥२॥३॥६॥३८॥४७॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

ईश्वर एक है और सतगुरु की कृपा से मिलता है।

रागु बिहागड़ा महला ९ ॥

राग बिहागड़ा में गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

हरि की गति नहि कोऊ जानै ॥

कोई भी मनुष्य यह नहीं जान सकता कि परमात्मा कैसा है,

जोगी जती तपी पचि हारे अरु बहु लोग सिआने ॥१॥ रहाउ ॥

अनगिनत योगी, अनगिनत तपस्वी, और अन्य बहुत सारे ज्ञानी मनुष्य थक-थक करके हार गए हैं ॥१॥ विराम॥

छिन महि राउ रंक कउ करई राउ रंक करि डारे ॥

वह परमात्मा एक क्षण में कंगाल को राजा बना देता है, और, राजा को कंगाल कर देता है,

रीते भरे भरे सखनावै यह ता को बिवहारे ॥१॥

खाली बर्तन भर देता है और भरे बर्तनों को खाली कर देता है (भाव, गरीबों को अमीर और अमीरों को गरीब बना देता है) यह उसका नित्य का काम है ॥१॥

अपनी माइआ आपि पसारी आपहि देखनहारा ॥

(इस दृश्य जगत-रूप तमाशे में) परमात्मा ने अपनी माया स्वयं खेली है, वह स्वयं इसकी सम्हाल कर रहा है।

नाना रूपु धरे बहु रंगी सभ ते रहै निआरा ॥२॥

वह अनेक रंगों का मालिक प्रभु कई तरह के रूप धारण करता है, और सभी रूपों से अलग भी रहता है ॥२॥

अगनत अपारु अलख निरंजन जिह सभ जगु भरमाइओ ॥

उस परमात्मा के गुण गिन नहीं हो सकते, वह अमित है, वह अदृश्य है, वह असंबद्ध है, उस परमात्मा ने ही पूरे जगत को (माया की) भटकना में डाल रखा है।

सगल भरम तजि नानक प्राणी चरनि ताहि चितु लाइओ ॥३॥१॥२॥

हे नानक! जिस मनुष्य ने उसके चरणों में मन जोड़ा है, उसने इस माया की सारी भटकना को त्याग कर ही जोड़ा है ॥३॥१॥२॥

सोरठि महला ९

राग सोरठ में गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

ईश्वर एक है और सतगुरु की कृपा से मिलता है।

रे मन राम सिउ करि प्रीति ॥

हे (मेरे) मन! परमात्मा से प्यार बनाए रख।

स्रवन गोबिंद गुनु सुनउ अरु गाउ रसना गीति ॥१॥ रहाउ ॥

(हे मनुष्य!) कानों से परमात्मा की स्तुति सुन और, जीभ से परमात्मा (की महिमा) के गीत गा! ॥१॥ विराम॥

करि साधसंगति सिमरु माधो होहि पतित पुनीत ॥

(हे मनुष्य!) गुरमुखों की संगत किया कर, परमात्मा का स्मरण करता रह। (स्मरण के वरदान से) विकारों भरे भी पवित्र बन जाते हैं।

कालु बिआलु जिउ परिओ डोलै मुखु पसारे मीत ॥१॥

हे मित्र! (इस काम में आलस्य न कर, देख!) मृत्यु सांप की तरह मुंह खोलकर घूमती है ॥१॥

आजु कालि फुनि तोहि ग्रसि है समझि राखउ चीति ॥

(हे मनुष्य!) अपने चित्त में समझ रख कि (यह मृत्यु) तुझे भी जल्दी ही हड़प कर लेगी।

कहै नानकु रामु भजि लै जातु अउसरु बीत ॥२॥१॥

नानक (तुझसे) कहता है कि (अब समय है) परमात्मा का भजन कर ले, यह समय गुजरता जा रहा है ॥२॥१॥

सोरठि महला ९ ॥

राग सोरठ में गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

मन की मन ही माहि रही ॥

(हे मनुष्य! देखो माया धारी का दुर्भाग्य! उसके) मन की आस मन में ही रह गई।

ना हरि भजे न तीरथ सेवे चोटी कालि गही ॥१॥ रहाउ ॥

न उसने परमात्मा का भजन किया, न ही उसने संत जनों की सेवा की, और, मृत्यु ने उसे पकड़ लिया ॥१॥ विराम॥

दारा मीत पूत रथ स्मपति धन पूरन सभ मही ॥

(हे मनुष्य!) स्त्री, मित्र, पुत्र, गाड़ियाँ, माल-सामान, धन-पदार्थ सारी ही धरती,

अवर सगल मिथिआ ए जानउ भजनु रामु को सही ॥१॥

यह सब कुछ नाशवान समझो। परमात्मा का भजन (ही) असली (साथी) है ॥१॥

फिरत फिरत बहुते जुग हारिओ मानस देह लही ॥

(हे मनुष्य!) कई युग (जन्मों) में भटक-भटक कर तू थक गया था।

नानक कहत मिलन की बरीआ सिमरत कहा नही ॥२॥२॥

नानक कहता है कि (हे मनुष्य! परमात्मा से) मिलन का यही मौका है, अब तू स्मरण क्यों नहीं करता? ॥२॥२॥

सोरठि महला ९ ॥
राग सोरठ में गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

मन रे कउनु कुमति तै लीनी ॥
हे मन! तू ने कौन सी बुरी शिक्षा ले ली है?

पर दारा निंदिआ रस रचिओ राम भगति नहि कीनी ॥१॥ रहाउ ॥
तू पराई स्त्री, पराई निंदा के रस में मस्त रहता है। परमात्मा की भक्ति तू ने (कभी) नहीं की ॥१॥ विराम॥

मुकति पंथु जानिओ तै नाहनि धन जोरन कउ धाइआ ॥
हे मनुष्य! तू विकारों से मुक्ति पाने का रास्ता (अभी तक) नहीं समझा, धन इकट्ठा करने के लिए तू सदा दौड़-भाग कर रहा है।

अंति संग काहू नही दीना बिरथा आपु बंधाइआ ॥१॥
(दुनिया की वस्तुओं में से) किसी ने अंततः किसी का साथ नहीं दिया। तू व्यर्थ ही अपने आपको (माया के मोह में) जकड़ रखा है ॥१॥

ना हरि भजिओ न गुर जनु सेविओ नह उपजिओ कछु गिआना ॥
हे मनुष्य! (अभी तक) न तू ने परमात्मा की भक्ति की है, न गुरु की शरण में आया है, न ही तेरे अंदर आत्मिक जीवन की समझ है।

घट ही माहि निरंजनु तेरै तै खोजत उदिआना ॥२॥
माया से निर्लिप्त प्रभू तेरे हृदय में बस रहा है, लेकिन तू (बाहर) जंगलों में उसे खोज रहा है ॥२॥

बहुतु जनम भरमत तै हारिओ असथिर मति नही पाई ॥
(हे मनुष्य!) अनेक जन्मों में भटकते हुए तू (मानव जन्म की बाजी) हार चुका है, तू ने ऐसी बुद्धि नहीं सीखी जिसके द्वारा (जन्मों के चक्र से) तुझे स्थिरता प्राप्त हो सके।

मानस देह पाइ पद हरि भजु नानक बात बताई ॥३॥३॥
हे नानक! (कह कि हे मनुष्य! गुरु ने तो यह) बात समझाई है कि मानव जन्म का (ऊँचा) दर्जा हासिल करके परमात्मा का भजन कर ॥३॥३॥

सोरठि महला ९ ॥
राग सोरठ में गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

मन रे प्रभ की सरनि बिचारो ॥

हे मन! परमात्मा की शरण में जाकर उसके नाम का ध्यान रखा कर।

जिह सिमरत गनका सी उधरी ता को जसु उर धारो ॥१॥ रहाउ ॥

जिस परमात्मा का स्मरण करते हुए गनका (विकारों में डूबने से) बच गई थी तू भी, (हे मनुष्य!) उसकी महिमा अपने हृदय में बसाई रख! ॥१॥ विराम॥

अटल भइओ ध्रूअ जा कै सिमरनि अरु निरभै पदु पाइआ ॥

(हे मनुष्य!) जिस परमात्मा के स्मरण की राह से ध्रुव हमेशा के लिए अनन्त हो गया है और उसने निर्भयता का आत्मिक दर्जा प्राप्त कर लिया था,

दुख हरता इह बिधि को सुआमी तै काहे बिसराइआ ॥१॥

तू उस परमात्मा को क्यों भूला हुआ है, वह तो इस प्रकार के दुखों का नाश करने वाला है ॥१॥

जब ही सरनि गही किरपा निधि गज गराह ते छूटा ॥

(हे मनुष्य!) जिस समय गज (हाथी) ने कृपा के समुद्र परमात्मा का आसरा लिया वह तंदुए की फाँसी से निकल गया था।

महमा नाम कहा लउ बरनउ राम कहत बंधन तिह तूटा ॥२॥

मैं कितनी हद तक परमात्मा के नाम की महिमा बताऊं? परमात्मा का नाम उच्चारण करते ही उस (हाथी) के बंधन टूट गए थे ॥२॥

अजामलु पापी जगु जाने निमख माहि निसतारा ॥

(हे मनुष्य!) सारा जगत जानता है कि अजामल विकारों भरा था (परमात्मा के नाम का स्मरण करके) आंख के झपकने जितने समय में ही उसका पार-उतारा हो गया था।

नानक कहत चेत चिंतामनि तै भी उतरहि पारा ॥३॥४॥

नानक कहता है कि (हे मनुष्य! तू) सभी इच्छाओं को पूरी करने वाले परमात्मा का नाम स्मरण करता रह। तू भी (संसार-समुद्र से) पार हो जाएगा ॥३॥॥४॥

सोरठि महला ९ ॥

राग सोरठ में गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

प्रानी कउनु उपाउ करै ॥

(हे मनुष्य! बता कि) मनुष्य वह कौन सा उपाय करें,

जा ते भगति राम की पावै जम को त्रासु हरै ॥१॥ रहाउ ॥

जिससे वह परमात्मा की भक्ति प्राप्त कर सके; और यम का डर दूर कर सके ॥१॥ विराम॥

कउनु करम बिदिआ कहु कैसी धरमु कउनु फुनि करई ॥

(हे मनुष्य!) बताओ, वह कौन से (धार्मिक) कर्म हैं, वह कैसी विद्या है, वह कौन सा धर्म है (जिसे मनुष्य) अपना ले;

कउनु नामु गुर जा कै सिमरै भव सागर कउ तरई ॥१॥

वह कौन सा गुरु का (बताया हुआ) नाम है जिसका स्मरण करने से मनुष्य संसार समुद्र से पार हो सकता है ॥१॥

कल मै एकु नामु किरपा निधि जाहि जपै गति पावै ॥

(हे मनुष्य!) कृपा के खजाने वाला परमात्मा का नाम ही दुनिया में है जिसे (जो मनुष्य) जपता है (वह) ऊँची आत्मिक अवस्था प्राप्त कर लेता है।

अउर धरम ता कै सम नाहनि इह बिधि बेदु बतावै ॥२॥

और किसी तरह के भी कोई कर्म उस (नाम) के बराबर नहीं हैं; वेद (भी) यह उपाय बताते हैं ॥२॥

सुखु दुखु रहत सदा निरलेपी जा कउ कहत गुसाई ॥

(हे मनुष्य!) जिसे (दुनिया) धरती का स्वामी कहता है वह सुख-दुख से अलग रहता है, वह सदा (माया से) विलग रहता है।

सो तुम ही महि बसै निरंतरि नानक दरपनि निआई ॥३॥५॥

हे नानक! (कह कि) वह तेरे अंदर भी एकरस निवास कर रहा है, जैसे शीशे में अक्स निवास करता है (उसका सदा स्मरण करना चाहिए) ॥३॥५॥

सोरठि महला ९ ॥

राग सोरठ में गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

माई मै किहि बिधि लखउ गुसाई ॥

हे माँ! धरती के खसम-प्रभु को मैं किस तरह पहचानूं?

महा मोह अगिआनि तिमरि मो मनु रहिओ उरझाई ॥१॥ रहाउ ॥

मेरा मन (तो) बड़े मोह की अज्ञानता में, मोह के अंधेरे में (सदा) फंसा रहता है ॥१॥ विराम॥

सगल जनम भरम ही भरम खोइओ नह असथिरु मति पाई ॥

(हे माँ! मैंने अपना) सारा जन्म भटकने में ही गंवा लिया है। (अभी तक ऐसी) बुद्धि नहीं हासिल की (जो मुझे) अविचल रख सके।

बिखिआसकत रहिओ निस बासुर नह छूटी अधमाई ॥१॥
दिन रात मैं माया में ही लिपटा रहता हूं। मेरी यह नीचता खत्म नहीं होती ॥१॥

साधसंगु कबहू नही कीना नह कीरति प्रभ गाई ॥
(हे माँ!) मैंने कभी गुरमुखों की संगति नहीं की, मैंने कभी परमात्मा की महिमा का गीत नहीं गाया।

जन नानक मै नाहि कोऊ गुनु राखि लेहु सरनाई ॥२॥६॥
हे दास नानक! (कह कि हे प्रभु!) मेरे भीतर कोई गुण नहीं है। मुझे अपनी शरण में रख ॥२॥६॥

सोरठि महला ९ ॥
राग सोरठ में गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

माई मनु मेरो बसि नाहि ॥
हे माँ! मेरा मन मेरे काबू में नहीं।

निस बासुर बिखिअन कउ धावत किहि बिधि रोकउ ताहि ॥१॥ रहाउ ॥
रात दिन पदार्थों की खातिर दौड़ता फिरता है। मैं इसको किस तरीके से रोकूँ? ॥१॥ विराम॥

बेद पुरान सिम्रिति के मत सुनि निमख न हीए बसावै ॥
यह जीव वेदों, पुराणों, स्मृतियों का उपदेश सुनकर (भी) रता भर समय के लिए (उस उपदेश को अपने) हृदय में नहीं बसाता।

पर धन पर दारा सिउ रचिओ बिरथा जनमु सिरावै ॥१॥
पराए धन, पराई स्त्री के मोह में मस्त रहता है, (इस तरह अपना) जन्म व्यर्थ गुजारता है ॥१॥

मदि माइआ कै भइओ बावरो सूझत नह कछु गिआना ॥
जीव माया के नशे में झल्ला हो रहा है, आध्यात्मिक जीवन के बारे में इसे कोई बुद्धि नहीं होती।

घट ही भीतरि बसत निरंजनु ता को मरमु न जाना ॥२॥
माया से विलग प्रभु इसके हृदय में ही निवास करता है, पर उसका भेद यह जीव नहीं समझता ॥२॥

जब ही सरनि साध की आइओ दुरमति सगल बिनासी ॥
जब जीव गुरु की शरण पालता है, तब इसकी सारी नाकाम बुद्धि नाश हो जाती है।

तब नानक चेतिओ चिंतामनि काटी जम की फासी ॥३॥७॥

तब, हे नानक! यह मन की सारी कामना पूरी करने वाले परमात्मा को स्मरण करता है; और, इसकी यम की फाँसी (भी) कट जाती है ॥३॥७॥

सोरठि महला ९ ॥

राग सोरठ में गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

रे नर इह साची जीअ धारि ॥

हे मनुष्य! अपने दिल में यह दृढ़ बात डाल ले,

सगल जगतु है जैसे सुपना बिनसत लगत न बार ॥१॥ रहाउ ॥

(कि) सारा संसार सपनों की तरह है, (इसके) नाश होने में समय नहीं लगता ॥१॥ विराम॥

बारू भीति बनाई रचि पचि रहत नही दिन चारि ॥

(हे मनुष्य!) (जैसे) रेत की दीवार बना करके ऊपर से लेप करके तैयार की हो, तो वह दीवार चार दिन भी (टिकी) नहीं रहती;

तैसे ही इह सुख माइआ के उरझिओ कहा गवार ॥१॥

इसी तरह इस मायाजाल का सुख भी उस (रेत की दीवार) जैसे ही है। हे मूर्ख! तू इन सुखों में क्यों मस्त हो रहा है? ॥१॥

अजहू समझि कछु बिगरिओ नाहिनि भजि ले नामु मुरारि ॥

(हे मनुष्य!) अभी भी समझ जा (अभी) कुछ बिगड़ा नहीं; और परमात्मा का नाम स्मरण कर!

कहु नानक निज मतु साधन कउ भाखिओ तोहि पुकारि ॥२॥८॥

नानक कहता है कि (हे मनुष्य!) मैं तुझे (संत-जनो का) यह खास निजी विचार पुकार के बता रहा हूं ॥२॥८॥

सोरठि महला ९ ॥

राग सोरठ में गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

इह जगि मीतु न देखिओ कोई ॥

(हे मनुष्य!) इस जगत में कोई (अखीर तक साथ निभाने वाला) मित्र (मैंने) नहीं देखा।

सगल जगतु अपनै सुखि लागिओ दुख मै संगि न होई ॥१॥ रहाउ ॥

पूरा संसार अपने सुख में ही व्यस्त है। दुख में (कोई किसी के) साथ (साथी) नहीं बनता ॥१॥ विराम॥

दारा मीत पूत सनबंधी सगरे धन सिउ लागे ॥

हे मनुष्य! स्त्री, मित्र, पुत्र, रिश्तेदार, ये सब धन के साथ (ही) प्रेम करते हैं।

जब ही निरधन देखिओ नर कउ संगु छाडि सभ भागे ॥१॥

जब ही इन्होंने मनुष्य को कंगाल देखा, (तब) साथ छोड़कर दूर हो जाते हैं ॥१॥

कहंउ कहा यिआ मन बउरे कउ इन सिउ नेहु लगाइओ ॥

(हे मनुष्य!) मैं इस मूर्ख मन को क्या समझाऊं? (इसने) इन (कच्चे साथियों) के साथ प्रेम पाया हुआ है।

दीना नाथ सकल भै भंजन जसु ता को बिसराइओ ॥२॥

(जो परमात्मा) गरीबों का रक्षक और सभी डर का नाशक है, उसकी स्तुति-प्रशंसा (इसने) भुला दी हुई है ॥२॥

सुआन पूछ जिउ भइओ न सूधउ बहुतु जतनु मै कीनउ ॥

हे मनुष्य! जैसे कुत्ते की पूंछ सीधी नहीं होती (इसी तरह इस मन की परमात्मा की याद से लापरवाही हटती नहीं) मैंने बहुत जतन किया है।

नानक लाज बिरद की राखहु नामु तुहारउ लीनउ ॥३॥९॥

हे नानक! (कह कि हे प्रभु! अपने प्यार वाले)) मौलिक स्वभाव की लाज रख (मेरी मदद कर, तभी) मैं तेरा नाम जप सकूँगा ॥३॥९॥

सोरठि महला ९ ॥

राग सोरठ में गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

मन रे गहिओ न गुर उपदेसु ॥

हे मन! तू गुरु की शिक्षा ग्रहण नहीं करता।

कहा भइओ जउ मूडु मुडाइओ भगवउ कीनो भेसु ॥१॥ रहाउ ॥

(हे मनुष्य! गुरु का उपदेश भुला कर) यदि सिर भी मुंडा लिया, और भगवा रंग के कपड़े पहन लिए, तो भी क्या हासिल हुआ? (आध्यात्मिक जीवन में कुछ भी नहीं फायदा नहीं हुआ) ॥१॥ विराम॥

साच छाडि कै झूठह लागिओ जनमु अकारथु खोइओ ॥

(हे मनुष्य! भगवा वेष तो धारण कर लिया, पर) सदा-स्थिर प्रभू का नाम छोड़कर नाशवान पदार्थों में ही बुद्धि जोड़ी रखी,

करि परपंच उदर निज पोखिओ पसु की निआई सोइओ ॥१॥

(लोगों के साथ) छल करके अपना पेट पालता रहा, और पशुओं की तरह सोता रहा ॥१॥

राम भजन की गति नही जानी माइआ हाथि बिकाना ॥

(हे गाफिल मनुष्य) परमात्मा के भजन की जुगत नहीं समझता तथा माया के हाथ में बिकता रहता है।

उरझि रहिओ बिखिअन संगि बउरा नामु रतनु बिसराना ॥२॥

पगला मनुष्य मायिक पदार्थों (के मोह) में मग्न रहता है, और प्रभू के (श्रेष्ठ) रतन-नाम को भुलाए रखता है ॥२॥

रहिओ अचेतु न चेतिओ गोबिंद बिरथा अउध सिरानी ॥

(मनुष्य माया में फंसकर) लापरवाह रहता है, परमात्मा को याद नहीं करता, सारी उम्र व्यर्थ गुजार लेता है।

कहु नानक हरि बिरदु पछानउ भूले सदा परानी ॥३॥१०॥

नानक कहता है कि हे हरि! तू अपने मौलिक (प्रेम वाले) स्वभाव को चित्त में रख। यह जीव तो सदा भूले ही रहते हैं ॥३॥१०॥

सोरठि महला ९ ॥

राग सोरठ में गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

जो नरु दुख मै दुखु नही मानै ॥

(हे मनुष्य!) जो मनुष्य दुःख में घबराता नहीं,

सुख सनेहु अरु भै नही जा कै कंचन माटी मानै ॥१॥ रहाउ ॥

जिस मनुष्य के हृदय में सुखों के प्रति मोह नहीं, और (किसी प्रकार का) डर नहीं, जो मनुष्य सोने को मिट्टी (समान) समझता है (उसके अंदर परमात्मा का निवास हो जाता है) ॥१॥ विराम॥

नह निंदिआ नह उसतति जा कै लोभु मोहु अभिमाना ॥

(हे मनुष्य!) जिस मनुष्य के अंदर किसी की चुगली-बुराई नहीं, किसी की खुशामद नहीं, जिस के अंदर ना लोभ है, ना मोह है, ना अहंकार है;

हरख सोग ते रहै निआरउ नाहि मान अपमाना ॥१॥

जो मनुष्य खुशी और गम से निर्लिप्त रहता है, जिसको ना आदर छू सकता है ना अपमान (उस मनुष्य के हृदय में परमात्मा का निवास हो जाता है) ॥१॥

आसा मनसा सगल तिआगै जग ते रहै निरासा ॥

(हे मनुष्य!) जो मनुष्य आशा उम्मीदों को सब त्याग देता है, जगत से असंबद्ध रहता है,

कामु क्रोधु जिह परसै नाहनि तिह घटि ब्रहमु निवासा ॥२॥

तथा जिस मनुष्य को ना काम-वासना छू सकती है ना क्रोध छू सकता है, उस मनुष्य के हृदय में परमात्मा का निवास हो जाता है ॥२॥

गुर किरपा जिह नर कउ कीनी तिह इह जुगति पछानी ॥

(पर) जिस मनुष्य पर गुरु ने मेहर की, उसने (ही जीवन की) यह प्रणाली समझी है।

नानक लीन भइओ गोबिंद सिउ जिउ पानी संगि पानी ॥३॥११॥

हे नानक! (कह कि) वह मनुष्य परमात्मा के साथ इस तरह एक हो जाता है, जैसे पानी के साथ पानी मिल जाता है ॥३॥११॥

सोरठि महला ९ ॥

राग सोरठ में गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

प्रीतम जानि लेहु मन माही ॥

हे मित्र! (अपने) मन में (यह बात) दृढ़ कर के समझ ले,

अपने सुख सिउ ही जगु फांधिओ को काहू को नाही ॥१॥ रहाउ ॥

(कि) सारा संसार अपने सुख के साथ ही बंधा हुआ है। कोई भी किसी का (अंत तक निभाने वाला साथी) नहीं (बनता) ॥१॥ विराम॥

सुख मै आनि बहुतु मिलि बैठत रहत चहू दिसि घेरै ॥

(हे मित्र! जब मनुष्य)! सुख में (होता है, तब) कई यार-दोस्त मिल कर (उस पास) बैठते हैं, और, (उसे) चारों ओर घेरे रखते हैं।

बिपति परी सभ ही संगु छाडित कोऊ न आवत नेरै ॥१॥

(पर जब उसे कोई) मुसीबत आती है, सारे ही साथी छोड़ जाते हैं, (फिर) कोई भी (उसके) करीब नहीं आता ॥१॥

घर की नारि बहुतु हितु जा सिउ सदा रहत संग लागी ॥

(हे मित्र!) घर की पत्नी (भी), जिससे बड़ा प्यार होता है, जो सदा (पति के) साथ लगी रहती है,

जब ही हंस तजी इह कांइआ प्रेत प्रेत करि भागी ॥२॥

जिस ही समय (पति की) जीवात्मा इस शरीर को छोड़ देती है, तो पत्नी अलग हो जाती है (यह कह करके) कि यह मर चुका है मर चुका है ॥२॥

इह बिधि को बिउहारु बनिओ है जा सिउ नेहु लगाइओ ॥

(हे मित्र! दुनिया का) इस तरह का व्यवहार बना हुआ है जिस से (मनुष्य ने) प्यार पाया हुआ है,

अंत बार नानक बिनु हरि जी कोऊ कामि न आइओ ॥३॥१२॥१३९॥

लेकिन, हे नानक! (अंत में) आखिरी समय पर परमात्मा के अलावा और कोई भी (मनुष्य की) मदद नहीं कर सकता ॥३॥१२॥१३९॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

ईश्वर एक है और सतगुरु की कृपा से मिलता है।

धनासरी महला ९ ॥

राग धनासरी में गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

काहे रे बन खोजन जाई ॥

(हे मनुष्य! परमात्मा को) खोजने के लिए तू जंगलों में क्यों जाता है?

सरब निवासी सदा अलेपा तोही संगि समाई ॥१॥ रहाउ ॥

परमात्मा सब में निवास करने वाला है, (फिर भी) सदा (माया के प्रभाव से) विलग रहता है। वह परमात्मा तेरे साथ भी रहता है ॥१॥ विराम॥

पुहप मधि जिउ बासु बसतु है मुकर माहि जैसे छाई ॥

(हे मनुष्य!) जैसे फूल में सुगंध रहती है, जैसे शीशे में (शीशा देखने वाले का) अक्स रहता है,

तैसे ही हरि बसे निरंतरि घट ही खोजहु भाई ॥१॥

तैसे परमात्मा एकरस सब के अंदर निवास करता है। (इसलिए, उसे) अपने हृदय में ही खोज! ॥१॥

बाहरि भीतरि एको जानहु इहु गुर गिआनु बताई ॥

(हे मनुष्य!) गुरु का (आत्मिक जीवन का) उपदेश यह बताता है कि (अपने शरीर के) अंदर (और अपने शरीर से) बाहर (हर जगह) एक परमात्मा को (बसता) समझो।

जन नानक बिनु आपा चीनै मिटै न भ्रम की काई ॥२॥१॥

हे दास नानक! अपना आत्मिक जीवन परखने के बगैर (मन से) भटकने का जाला दूर नहीं हो सकता (और, उतना ही समय सर्व-व्यापक परमात्मा की सूझ नहीं आ सकती) ॥२॥१॥

धनासरी महला ९ ॥

राग धनासरी में गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

साधो इहु जगु भरम भुलाना ॥

हे संत लोगों! यह जगत (माया की) भटकने में (पड़कर) परेशान रहता है।

राम नाम का सिमरनु छोडिआ माइआ हाथि बिकाना ॥१॥ रहाउ ॥

प्रभू के नाम का स्मरण छोड़ देता है, और माया के हाथों में बिकता रहता है (माया के वश में आत्मिक जीवन गवा देता है) ॥१॥ विराम॥

मात पिता भाई सुत बनिता ता कै रसि लपटाना ॥

हे संत लोगों! माँ, पिता, भाई, पुत्र, पत्नी (भूला हुआ जगत) के मोह में फँसा रहता है।

जोबनु धनु प्रभता कै मद मै अहिनिसि रहै दिवाना ॥१॥

जवानी, धन, ताकत के नशे में जगत दिन रात झूलता रहता है ॥१॥

दीन दइआल सदा दुख भंजन ता सिउ मनु न लगाना ॥

जो परमात्मा दीन (ग़रीबों) पर दया करने वाला है, जो सभी दुखों का नाश करने वाला है, जगत उस से मन नहीं जोड़ता।

जन नानक कोटन मै किनहू गुरमुखि होइ पछाना ॥२॥२॥

हे दास नानक! (कहता है कि) करोड़ों में से किसी विरले मनुष्य ने ही गुरु की शरण ले कर परमात्मा के साथ संबंध बनाया है ॥२॥२॥

धनासरी महला ९ ॥

राग धनासरी में गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

तिह जोगी कउ जुगति न जानउ ॥

हे मनुष्य! मैं समझता हूँ कि उस योगी को (सही) जीवन-विधि (अभी) नहीं आई,

लोभ मोह माइआ ममता फुनि जिह घटि माहि पछानउ ॥१॥ रहाउ ॥

जिस (योगी) के हृदय में लोभ माया के मोह और ममता (की लहरें उठ रही) देखता हूँ ॥1॥ विराम॥

पर निंदा उसतति नह जा कै कंचन लोह समानो ॥

(हे मनुष्य!) जिस मनुष्य के हृदय में पराई निंदा नहीं है, पराई खुशामद नहीं है, जिसको सोना लोहे के समान दिखता है,

हरख सोग ते रहै अतीता जोगी ताहि बखानो ॥१॥

जो मनुष्य खुशी-गमी से विलग रहता है; उसे ही योगी कहो ॥1॥

चंचल मनु दह दिसि कउ धावत अचल जाहि ठहरानो ॥

(हे मनुष्य!) यह सदा भटकता रहने वाला मन दस तरफ दौड़ता फिरता है। जिस मनुष्य ने इसको अविचल कर के टिका लिया है,

कहु नानक इह बिधि को जो नरु मुकति ताहि तुम मानो ॥२॥३॥

नानक कहता है कि जो मनुष्य इस प्रकार का है, समझ ले कि उसे विकारों से मुक्ति मिल गई है ॥2॥3॥

धनासरी महला ९ ॥

राग धनासरी में गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

अब मै कउनु उपाउ करउ ॥

हे मनुष्य! अब मैं कौन सा प्रयास करूँ?

जिह बिधि मन को संसा चूकै भउ निधि पारि परउ ॥१॥ रहाउ ॥

जिस से (मेरे) मन का डर खत्म हो जाए, और, मैं संसार-समुद्र को पार कर जाऊं ॥१॥ विराम॥

जनमु पाइ कछु भलो न कीनो ता ते अधिक डरउ ॥

(हे मनुष्य!) मानव जन्म प्राप्त करके मैंने कोई भलाई नहीं की, इस लिए मैं बहुत डरता रहता हूँ।

मन बच क्रम हरि गुन नही गाए यह जीअ सोच धरउ ॥१॥

मैं (अपनी) जिंदगी में (हर समय) यही चिंता करता रहता हूँ कि मैं अपने मन से, वचन से, कर्म से (कभी भी) परमात्मा के गुण नहीं गाता रहा ॥१॥

गुरमति सुनि कछु गिआनु न उपजिओ पसु जिउ उदरु भरउ ॥

(हे मनुष्य!) गुरु की शिक्षा सुनकर मेरे अंदर आत्मिक जीवन की कोई भी समझ पैदा नहीं हुई, मैं पशु की तरह (हर दिन) अपना पेट भर लेता हूँ।

कहु नानक प्रभ बिरदु पछानउ तब हउ पतित तरउ ॥२॥४॥९॥९॥१३॥५८॥४॥९३॥

नानक कहता है कि हे प्रभु! मैं विकारों का भरा (पतित) तभी (संसार-समुद्र से) पार जा सकता हूँ जब अपने प्राचीन (प्रेम भरे) स्वभाव को ध्यान में रखे ॥२॥४॥९॥९॥१३॥५८॥४॥९३॥

जैतसरी महला ९

राग जैतसरी में गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

ईश्वर एक है और सतगुरु की कृपा से मिलता है।

भूलिओ मनु माइआ उरझाइओ ॥

(हे मनुष्य!) (सही जीवन मार्ग) को भूलकर मन माया-मोह में फंसा रहता है।

जो जो करम कीओ लालच लगि तिह तिह आपु बंधाइओ ॥१॥ रहाउ ॥

(फिर, यह) लालच में फंस कर जो भी कार्य करता है, उन के द्वारा अपने आप को (माया के मोह में और) फंसा लेता है ॥१॥ विराम॥

समझ न परी बिखै रस रचिओ जसु हरि को बिसराइओ ॥
(हे मनुष्य! सही जीवन मार्ग से भटकने वाला मनुष्य) आत्मिक जीवन की समझ नहीं पाता, कुकर्मों के स्वाद में मस्त रहता है, परमात्मा की महिमा को भुलाए रखता है।

संगि सुआमी सो जानिओ नाहिन बनु खोजन कउ धाइओ ॥१॥
परमात्मा (तो इसके) साथ (बसता) है, पर वह ऐसा नहीं समझता, और उसे जंगल जा कर खोजता है ॥१॥

रतनु रामु घट ही के भीतरि ता को गिआनु न पाइओ ॥
(हे मनुष्य!) रत्न (जैसा कीमती) हरि-नाम हृदय के अंदर ही निवास करता है (पर भुला हुआ मनुष्य) उसके साथ संबंध नहीं बनाता।

जन नानक भगवंत भजन बिनु बिरथा जनमु गवाइओ ॥२॥१॥
हे दास नानक! (कह कि) परमात्मा की भक्ति के बिना मनुष्य अपनी ज़िन्दगी व्यर्थ गवा देता है ॥२॥१॥

जैतसरी महला ९ ॥
राग जैतसरी में गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

हरि जू राखि लेहु पति मेरी ॥
हे प्रभू जी! मेरी इज़्ज़त रख लो।

जम को त्रास भइओ उर अंतरि सरनि गही किरपा निधि तेरी ॥१॥ रहाउ ॥
मेरे दिल में मौत का डर बस रहा है, (इससे बचने के लिए) हे कृपा के खजाने प्रभू! मैंने तेरा आसरा लिया है॥१॥ विराम॥

महा पतित मुगध लोभी फुनि करत पाप अब हारा ॥
हे प्रभू! मैं बड़ा विकारों भरा हूँ, मूर्ख हूँ, लालची भी हूँ, पाप करते-करते अब मैं थक गया हूँ।

भै मरबे को बिसरत नाहिन तिह चिंता तनु जारा ॥१॥
मुझे मरने का डर (किसी समय) भूलता नहीं, इस (मरने) की चिंता ने मेरा शरीर जला दिया है॥१॥

कीए उपाव मुकति के कारनि दह दिसि कउ उठि धाइआ ॥
(हे मनुष्य! मौत के इस सहम से) मुक्ति हासिल करने के लिए मैंने अनेक हीले किए हैं, दसों दिशाओं में उठ-उठ कर दौड़ा हूँ।

घट ही भीतरि बसै निरंजनु ता को मरमु न पाइआ ॥२॥
(माया के मोह से) निर्लिप्त परमात्मा दिल में ही बसता है, उसका भेद मैंने नहीं समझा॥२॥

नाहिन गुनु नाहिन कछु जपु तपु कउनु करमु अब कीजै ॥

(परमात्मा की शरण के बिना और) कोई गुण नहीं कोई जाप तप नहीं (जो मौत के सहम से बचा ले, फिर) अब कौन सा काम किया जाए?

नानक हारि परिओ सरनागति अभै दानु प्रभ दीजै ॥३॥२॥

हे नानक! (कह कि हे प्रभू! अन्य साधनों की ओर से) हार कर मैं तेरी शरण आ पड़ा हूँ, तू मुझे मौत के डर से मुक्ति का दान दे! ॥३॥२॥

जैतसरी महला ९ ॥

राग जैतसरी में गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

मन रे साचा गहो बिचारा ॥

हे मेरे मन! यह अटल विचार (अपने अंदर) संभाल कर रख,

राम नाम बिनु मिथिआ मानो सगरो इहु संसारा ॥१॥ रहाउ ॥

परमात्मा के नाम से बगैर बाकी इस सारे संसार को नाशवान जान ॥१॥ विराम॥

जा कउ जोगी खोजत हारे पाइओ नाहि तिह पारा ॥

(हे मेरे मन!) योगी लोग जिस परमात्मा को खोजते-खोजते थक गए, और, उसके स्वरूप का अंत न पा सके,

सो सुआमी तुम निकटि पछानो रूप रेख ते निआरा ॥१॥

उस मालिक को तू अपने साथ ही बसता जान, पर उसका कोई रूप उसका कोई चिह्न बताया नहीं जा सकता ॥१॥

पावन नामु जगत मै हरि को कबहू नाहि स्मभारा ॥

(हे मेरे मन!) जगत में परमात्मा का नाम (ही) पवित्र करने वाला है, तू ने उस नाम को (अपने अंदर) कभी संभाल कर नहीं रखा।

नानक सरनि परिओ जग बंदन राखहु बिरदु तुहारा ॥२॥३॥

हे नानक! (कह कि) हे सारे जगत के नमस्कार-योग प्रभू! मैं तेरी शरण आया हूँ, मेरी रक्षा कर। यह तेरा मूल-प्राचीन स्वभाव है (कि तू शरण आए की रक्षा करता है) ॥२॥३॥

टोडी महला ९

राग टोडी में गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

ईश्वर एक है और सतगुरु की कृपा से मिलता है।

कहउ कहा अपनी अधमाई ॥

(हे मनुष्य!) मैं अपनी नीचता कितनी सी बयान करूँ?

उरझिओ कनक कामनी के रस नह कीरति प्रभ गाई ॥१॥ रहाउ ॥

मैं (कभी) परमात्मा की स्तुति-प्रशंसा नहीं की, (मेरा मन) धन-पदार्थ और स्त्री के रस में ही फँसा रहता है ॥१॥ विराम॥

जग झूठे कउ साचु जानि कै ता सिउ रुच उपजाई ॥

(हे मनुष्य!) इस नाशवान संसार को सदा कायम रहने वाला समझकर मैंने इस संसार के साथ ही प्रीत बनाई हुई है।

दीन बंध सिमरिओ नही कबहू होत जु संगि सहाई ॥१॥

मैं उस परमात्मा का नाम कभी नहीं स्मरण करता जो दीनों का रिश्तेदार है, और जो (सदा हमारा) साथ मददगार है ॥१॥

मगन रहिओ माइआ मै निस दिनि छुटी न मन की काई ॥

(हे मनुष्य!) मैं रात दिन माया (के मोह) में मस्त रहा हूँ, (इस तरह मेरे) मन की मैल दूर नहीं हो सकी।

कहि नानक अब नाहि अनत गति बिनु हरि की सरनाई ॥२॥१॥३१॥

नानक कहता है कि अब (जब मैं गुरु की शरण में आया हूँ, तो मुझे समझ आ गई है कि) प्रभू की शरण पाने के बिना किसी भी और जगह ऊँची आत्मिक अवस्था प्राप्त नहीं हो सकती ॥२॥१॥३१॥

तिलंग महला ९ काफी

राग तिलंग में गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

ईश्वर एक है और सतगुरु की कृपा से मिलता है।

चेतना है तउ चेत लै निसि दिनि मै प्रानी ॥

(हे मनुष्य!) यदि तू परमात्मा का नाम स्मरण करना चाहता है, तो दिन-रात एक करके स्मरण करना शुरू कर दे,

छिनु छिनु अउध बिहातु है फूटै घट जिउ पानी ॥१॥ रहाउ ॥
(क्योंकि) जैसे दरार वाले घड़े में से पानी (धीरे-धीरे निकलता रहता है, वैसे ही) एक-एक क्षण कर के उम्र बीतती जा रही है ॥१॥ विराम॥

हरि गुन काहि न गावही मूरख अगिआना ॥
हे मूर्ख! हे बे-समझ! तू परमात्मा की स्तुति-प्रशंसा के गीत क्यों नहीं गाता?

झूठै लालचि लागि कै नहि मरनु पछाना ॥१॥
माया के झूठे लालच में फँस कर तू मृत्यु को (भी) याद नहीं करता ॥१॥

अजहू कछु बिगरिओ नही जो प्रभ गुन गावै ॥
पर, यदि मनुष्य परमात्मा के गुण गाना शुरू कर दे (चाहे स्मरण-हीनता में कितनी ही उम्र गुजर चुकी हो) फिर भी कोई नुक़सान नहीं होता,

कहु नानक तिह भजन ते निरभै पदु पावै ॥२॥१॥
(क्योंकि) नानक कहता है कि उस परमात्मा के भजन के वरदान से मनुष्य वो आत्मिक दर्जा प्राप्त कर लेता है, जहाँ कोई डर पहुँच नहीं सकता ॥२॥१॥

तिलंग महला ९ ॥
राग तिलंग में गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

जाग लेहु रे मना जाग लेहु कहा गाफल सोइआ ॥
हे मन! होश कर, होश कर! तू क्यों (माया के मोह में) बेपरवाह होकर सो रहा है?

जो तनु उपजिआ संग ही सो भी संगि न होइआ ॥१॥ रहाउ ॥
(देख!) जो (यह) शरीर (मनुष्य के) साथ ही पैदा होता है; यह भी (आखिर में) साथ नहीं जाता ॥१॥ विराम॥

मात पिता सुत बंध जन हितु जा सिउ कीना ॥
(हे मन! देख!) माँ, पिता, पुत्र, रिश्तेदार, जिनके साथ मनुष्य (पूरी उम्र) प्यार करता रहता है,

जीउ छूटिओ जब देह ते डारि अगनि मै दीना ॥१॥
जब आत्मा शरीर से अलग होती है, तब (वे सभी रिश्तेदार, उसके शरीर को) आग में फेंक देते हैं ॥१॥

जीवत लउ बिउहारु है जग कउ तुम जानउ ॥
(हे मन!) जगत को तू ऐसे ही समझ कि यह जिंदगी तक ही उपयोगी रहता है।

नानक हरि गुन गाइ लै सभ सुफन समानउ ॥२॥२॥

हे नानक! (कह कि) यह सारा सपना जैसा ही है। (इसलिए जब तक जीवित हो) परमात्मा के गुण गाता रह ॥२॥२॥

तिलंग महला ९ ॥

राग तिलंग में गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

हरि जसु रे मना गाइ लै जो संगी है तेरो ॥

हे मन! परमात्मा की स्तुति-प्रशंसा का गीत गाया कर, स्तुति-प्रशंसा ही तेरा असली साथी है।

अउसरु बीतिओ जातु है कहिओ मान लै मेरो ॥१॥ रहाउ ॥

मेरा वचन मान ले। उम्र का समय बीता जा रहा है ॥१॥ विराम॥

स्मपति रथ धन राज सिउ अति नेहु लगाइओ ॥

(हे मन!) मनुष्य धन-सम्पत्ति, रथ, माल, राज से बहुत मोह करता है।

काल फास जब गलि परी सभ भइओ पराइओ ॥१॥

पर जब मौत की फांसी (उसके) गले में पड़ती है, हर एक चीज बेगानी हो जाती है ॥१॥

जानि बूझ कै बावरे तै काजु बिगारिओ ॥

हे भोले मनुष्य! यह सब कुछ जानते हुए भी तू अपना काम बिगाड़ रहा है।

पाप करत सुकचिओ नही नह गरबु निवारिओ ॥२॥

तू पाप करते हुए (कभी) झिझकता नहीं, तू (इस धन-सम्पत्ति का) मान भी दूर नहीं करता ॥२॥

जिह बिधि गुर उपदेसिआ सो सुनु रे भाई ॥

(हे मनुष्य!) गुरु ने (मुझे) जिस तरह उपदेश दिया है, वह (तू भी) सुन ले।

नानक कहत पुकारि कै गहु प्रभ सरनाई ॥३॥३॥

नानक (तुझे) पुकार कर कहता है कि प्रभू की शरण में रह (सदा प्रभू का नाम जपा कर) ॥३॥३॥

रागु बिलावलु महला ९ दुपदे

राग बिलावल में गुरु तेग बहादुर जी की दो-बंदों वाली वाणी।

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

ईश्वर एक है और सतगुरु की कृपा से मिलता है।

दुख हरता हरि नामु पछानो ॥

(हे मनुष्य!) यह हरि-नाम सारे दुखों का नाश करने वाला है। अपने हृदय में उस हरि-नाम के साथ जान-पहचान बनाए रख!

अजामलु गनिका जिह सिमरत मुकत भए जीअ जानो ॥१॥ रहाउ ॥

जिस नाम का स्मरण करते-कतरते अजामल विकारों से हट गया और गणिका विकारों से मुक्त हो गई। तू भी परमात्मा के नाम के साथ जान-पहचान रख! ॥१॥ विराम॥

गज की त्रास मिटी छिनहू महि जब ही रामु बखानो ॥

हे मनुष्य! जब गज ने परमात्मा का नाम उचार किया, उसकी कठिनाई भी एक छिन में ही दूर हो गई।

नारद कहत सुनत ध्रूअ बारिक भजन माहि लपटानो ॥१॥

नारद का किया हुआ उपदेश सुनते ही बालक ध्रू परमात्मा के भजन में मस्त हो गया ॥१॥

अचल अमर निरभै पदु पाइओ जगत जाहि हैरानो ॥

(हरि-नाम के भजन के वरदान से ध्रू ने) ऐसा आत्मिक दर्जा प्राप्त कर लिया जो सदा के लिए अटल और अमर हो गया। उसे जान के दुनिया हैरान हो रही है।

नानक कहत भगत रछक हरि निकटि ताहि तुम मानो ॥२॥१॥

नानक कहता है कि (हे मनुष्य!) तू भी उस परमात्मा को सदा अपने साथ में रहता समझ, वह परमात्मा अपने भक्तों की रक्षा करने वाला है ॥२॥१॥

बिलावलु महला ९ ॥

राग बिलावल में गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

हरि के नाम बिना दुखु पावै ॥

(हे मनुष्य!) परमात्मा के नाम (स्मरण करने) के बिना मनुष्य दुःख सहन करता रहता है।

भगति बिना सहसा नह चूकै गुरु इहु भेदु बतावै ॥१॥ रहाउ ॥

गुरु (जीवन-मार्ग की) यह गहरी बात बताता है कि परमात्मा की भक्ति करने के बिना मनुष्य का सहम खत्म नहीं होता ॥१॥ विराम॥

कहा भइओ तीरथ ब्रत कीए राम सरनि नही आवै ॥

(हे मनुष्य!) यदि मनुष्य परमात्मा की शरण नहीं लेता, तो उसके तीरथ-यात्रा करने का कोई लाभ नहीं, व्रत रखने का कोई फायदा नहीं।

जोग जग निहफल तिह मानउ जो प्रभ जसु बिसरावै ॥१॥
जो मनुष्य परमात्मा की स्तुति-प्रशंसा के पास नहीं जाते, मैं समझता हूँ कि उसके योग-साधन और जग (आदि कर्म सभी) व्यर्थ हैं ॥१॥

मान मोह दोनो कउ परहरि गोबिंद के गुन गावै ॥
जो मनुष्य अहंकार और माया का मोह छोड़कर परमात्मा की महिमा के गीत गाता रहता है और

कहु नानक इह बिधि को प्रानी जीवन मुकति कहावै ॥२॥२॥
नानक कहते हैं कि जो मनुष्य इस प्रकार का जीवन व्यतीत करने वाला है, वह जीवन-मुक्ति का अधिकारी है (वह मनुष्य उस श्रेणी में गिना जाता है, जो इस जिंदगी में विकारों की पकड़ से बचे रहते हैं) ॥२॥२॥

बिलावलु महला ९ ॥
राग बिलावल में गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

जा मै भजनु राम को नाही ॥
(हे मनुष्य!) जिस मनुष्य के अंदर परमात्मा के नाम का भजन नहीं है,

तिह नर जनमु अकारथु खोइआ यह राखहु मन माही ॥१॥ रहाउ ॥
यह बात दृढ़ता से चित्त में रखें कि उस मनुष्य ने अपनी जिंदगी व्यर्थ ही गवा ली है ॥1॥ विराम॥

तीरथ करै ब्रत फुनि राखै नह मनूआ बसि जा को ॥
(हे मनुष्य!) जिस मनुष्य का मन अपने वश में नहीं है, वह चाहे तीर्थों में स्नान करता है या व्रत भी रखता है,

निहफल धरमु ताहि तुम मानहु साचु कहत मै या कउ ॥१॥
पर (यह तीर्थ, व्रत आदि वाला) उसका धर्म व्यर्थ समझो। मैं ऐसे मनुष्य को भी यह सच्ची बात कह देता हूँ ॥1॥

जैसे पाहनु जल महि राखिओ भेदै नाहि तिह पानी ॥
(हे मनुष्य!) जैसे पत्थर पानी में रखा हुआ हो, उसे पानी छू नहीं सकता। (पानी उस पर असर नहीं कर सकता),

तैसे ही तुम ताहि पछानहु भगति हीन जो प्रानी ॥२॥
ऐसा ही तुम उस मनुष्य को समझो जो प्रभु की भक्ति से वंचित रहता है ॥2॥

कल मै मुकति नाम ते पावत गुरु यह भेदु बतावै ॥
(हे मनुष्य!) गुरु जिंदगी का यह राज बताता है कि मनुष्य जीवन में आदमी परमात्मा के नाम के माध्यम से ही विकारों से मुक्ति प्राप्त कर सकता है।

कहु नानक सोई नरु गरूआ जो प्रभ के गुन गावै ॥३॥३॥
नानक कहता है कि वही मनुष्य आदर-योग्य है जो परमात्मा के गुण गाता रहता है ॥3॥3॥

Page 901

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है और सतगुरु की कृपा से मिलता है।

रागु रामकली महला ९ तिपदे ॥
राग रामकली में गुरु तेग बहादुर जी की तीन-बंदों वाली वाणी।

रे मन ओट लेहु हरि नामा ॥
हे (मेरे) मन! परमात्मा के नाम का आसरा लिया कर,

जा कै सिमरनि दुरमति नासै पावहि पदु निरबाना ॥१॥ रहाउ ॥
जिस नाम के स्मरण से नाकाम बुद्धि नाश हो जाती है, (नाम के वरदान से) तू वह आत्मिक दर्जा हासिल कर लेगा जहाँ कोई वासना पहुँच नहीं सकती ॥१॥ विराम॥

बडभागी तिह जन कउ जानहु जो हरि के गुन गावै ॥
(हे मेरे मन!) जो मनुष्य परमात्मा के गुण गाता है उसे बड़े भागों वाला समझ!

जनम जनम के पाप खोइ कै फुनि बैकुंठि सिधावै ॥१॥
वह मनुष्य अनेक जन्मों के पाप दूर करके फिर वैकुंठ में जा पहुँचता है ॥१॥

Page 902

अजामल कउ अंत काल महि नाराइन सुधि आई ॥
(हे मेरे मन! देख, पुरानी प्रसिद्ध कथा है कि) आखिरी समय (पापी) अजामल को परमात्मा के नाम की सूझ आ गई,

जां गति कउ जोगीसुर बाछत सो गति छिन महि पाई ॥२॥
उसने वह ऊँची आत्मिक अवस्था एक पल में हासिल कर ली, जिस आत्मिक अवस्था को बड़े-बड़े योगी तड़पते रहते हैं ॥२॥

नाहिन गुनु नाहिन कछु बिदिआ धरमु कउनु गजि कीना ॥
(हे मेरे मन! गज-हाथी की कथा भी सुन!) (गज में) न तो कोई गुण था, न ही उसे कोई विद्या प्राप्त थी। (उस बेचारे) गज ने कौन सा धार्मिक काम करना था?

नानक बिरदु राम का देखहु अभै दानु तिह दीना ॥३॥१॥

हे नानक! लेकिन देख परमात्मा का मौलिक स्वभाव, परमात्मा ने उस गज को निर्भयता की पदवी वरदान कर दी ॥३॥१॥

रामकली महला ९ ॥

राग रामकली में गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

साधो कउन जुगति अब कीजै ॥

हे संत जनो! अब (इस मानव जन्म में वह) कौन सा उपाय किया जाए,

जा ते दुरमति सगल बिनासै राम भगति मनु भीजै ॥१॥ रहाउ ॥

जिसके कारण (मनुष्य के अंदर से) सारे गलत विचार नष्ट हो जाएं, और (मनुष्य का) मन परमात्मा की भक्ति में लग जाए? ॥१॥ विराम॥

मनु माइआ महि उरझि रहिओ है बूझै नह कछु गिआना ॥

(हे संत जनो! आम तौर पर मनुष्य का) मन माया (के मोह) में उलझा रहता है, मनुष्य रता भर भी समझदारी की यह बात नहीं विचारता,

कउनु नामु जगु जा कै सिमरै पावै पदु निरबाना ॥१॥

कि वह कौन सा नाम है जिसका स्मरण करने से जगत वासना-रहित आध्यात्मिक अवस्था प्राप्त कर लेता है ॥१॥

भए दइआल क्रिपाल संत जन तब इह बात बताई ॥

जब संत जन (किसी भाग्य वाले पर) दयालु होते हैं, कृपालु होते हैं, तब वह (उस मनुष्य को) यह बात बताते हैं कि-

सरब धरम मानो तिह कीए जिह प्रभ कीरति गाई ॥२॥

जिस मनुष्य ने परमात्मा की स्तुति-प्रशंसा का गीत गाना शुरू कर दिया, इस तरह समझ लो कि उसने सारे ही धार्मिक काम कर लिए ॥२॥

राम नामु नरु निसि बासुर महि निमख एक उरि धारै ॥

(जो) मनुष्य दिन रात में आंख-झमकी के एक क्षण के लिए भी परमात्मा का नाम (अपने) हृदय में बसाता है,

जम को त्रासु मिटै नानक तिह अपुनो जनमु सवारै ॥३॥२॥

हे नानक! वह अपना (मानव) जन्म सफल कर लेता है, उस मनुष्य के दिल से मृत्यु का भय दूर हो जाता है ॥३॥२॥

रामकली महला ९ ॥

राग रामकली में गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

प्रानी नाराइन सुधि लेहि ॥

हे मनुष्य, परमात्मा की याद दिल में बसाए रख!

छिनु छिनु अउध घटै निसि बासुर ब्रिथा जातु है देह ॥१॥ रहाउ ॥

(प्रभु की याद के बिना तेरा मनुष्य) शरीर व्यर्थ जा रहा है। दिन-रात एक-एक क्षण करके तेरी उम्र घटती जा रही है ॥१॥ विराम॥

तरनापो बिखिअन सिउ खोइओ बालपनु अगिआना ॥

(जीव भी अजब मंद-भागी है कि इस ने) जवानी (की उम्र) काम-विकारों में गवा ली, बाल-उम्र अज्ञानता में गवा ली।

बिरधि भइओ अजहू नही समझै कउन कुमति उरझाना ॥१॥

(अब) बूढ़ा हो गया है, पर अभी भी नहीं समझता। (पता नहीं यह) किस बुरे खयालों में फसा हुआ है ॥१॥

मानस जनमु दीओ जिह ठाकुरि सो तै किउ बिसराइओ ॥

हे प्राणी! जिस ठाकुर-प्रभू ने (तेरे को) मनुष्य जन्म दिया है, तू उसे क्यों भूल रहा है?

मुकतु होत नर जा कै सिमरै निमख न ता कउ गाइओ ॥२॥

हे नर! जिस परमात्मा का नाम स्मरण से माया के बंधनों से मुक्ति होती है तू आंख की एक झमक के लिए भी उसकी (की महिमा) नहीं गाता ॥२॥

माइआ को मदु कहा करतु है संगि न काहू जाई ॥

(हे प्राणी!) क्यों माया का (इतना) मान तू कर रहा है? (यह तो) किसी के साथ भी (अंत समय) नहीं जाती।

नानकु कहतु चेति चिंतामनि होइ है अंति सहाई ॥३॥३॥८१॥

नानक कहता है कि परमात्मा का स्मरण करता रह। अंत समय वह तेरा मददगार होगा ॥३॥३॥८१॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

ईश्वर एक है और सतगुरु की कृपा से मिलता है।

मारू महला ९ ॥

राग मारू में गुरू तेग बहादुर जी की वाणी।

हरि को नामु सदा सुखदाई ॥
परमात्मा का नाम सदैव आत्मिक आनंद देने वाला है,

जा कउ सिमरि अजामलु उधरिओ गनिका हू गति पाई ॥१॥ रहाउ ॥
जिस नाम का स्मरण करके अजामल विकारों से बच गया था, (इस नाम का स्मरण कर!) (इसी तरह) गनिका वेश्या ने भी ऊँची आत्मिक अवस्था हासिल कर ली थी ॥१॥ विराम॥

पंचाली कउ राज सभा महि राम नाम सुधि आई ॥
दुर्योधन के राज-दरबार में द्रौपदी ने (भी) परमात्मा के नाम का ध्यान किया था,

ता को दूखु हरिओ करुणा मै अपनी पैज बढाई ॥१॥
और, तरस-सूरत परमात्मा ने उसका दुख दूर किया था, (और इस तरह) अपना नाम बढ़ाया था ॥१॥

जिह नर जसु किरपा निधि गाइओ ता कउ भइओ सहाई ॥
जिन भी बंदों ने कृपा के खजाने परमात्मा की स्तुति-प्रशंसा की, परमात्मा उनका मददगार (हो कर) पहुंचा।

कहु नानक मै इही भरोसै गही आनि सरनाई ॥२॥१॥
नानक कहता है कि मैं भी इसी भरोसे पर हो कर परमात्मा की शरण में हूँ ॥२॥१॥

मारू महला ९ ॥
राग मारू में गुरू तेग बहादुर जी की वाणी।

अब मै कहा करउ री माई ॥
हे माँ! (जब समय गुजरने वाला होता है) अब मैं क्या कर सकता हूँ? (अर्थात, समय गुजरने पर मानव कुछ भी नहीं कर सकता)।

सगल जनमु बिखिअन सिउ खोइआ सिमरिओ नाहि कन्हाई ॥१॥ रहाउ ॥
जिस व्यक्ति ने अपनी पूरी ज़िंदगी काम-विकारों में बिता दी, और परमात्मा का स्मरण कभी नहीं किया (वह समय बीतने पर फिर कुछ नहीं कर सकता) ॥१॥ विराम॥

काल फास जब गर महि मेली तिह सुधि सभ बिसराई ॥
(हे माँ!) जब यमराज (मनुष्य के) गले में मौत का जाल डाल देता है, तब वह उसकी सारी समझ बुद्धि भुला देता है।

राम नाम बिनु या संकट महि को अब होत सहाई ॥१॥
उस विपत्ति में परमात्मा के नाम के बगैर और कोई भी सहायक नहीं बन सकता (मौत के जाल से, आत्मिक मृत्यु के भय से सिर्फ हरि-नाम ही बचाता है) ॥१॥

जो स्मपति अपनी करि मानी छिन महि भई पराई ॥

(हे माँ!) जो धन-संपत्ति को मनुष्य हमेशा अपना समझता है (पर जब मौत आती है तो वह धन-संपत्ति) एक क्षण में बेगानी हो जाती है।

कहु नानक यह सोच रही मनि हरि जसु कबहू न गाई ॥२॥२॥

नानक कहता है कि उस समय मनुष्य के मन में यह पछतावा रह जाता है कि परमात्मा की स्तुति-प्रशंसा कभी नहीं की ॥२॥२॥

मारू महला ९ ॥

राग मारू में गुरू तेग बहादुर जी की वाणी।

माई मै मन को मानु न तिआगिओ ॥

(हे माँ! जब से मैंने गुरु के चरणों में प्रेम पाया है, तब से मुझे पछतावा लगा है कि) मैंने अपने मन का अहंकार नहीं छोड़ा।

माइआ के मदि जनमु सिराइओ राम भजनि नही लागिओ ॥१॥ रहाउ ॥

माया के नशे में मैंने अपनी उम्र गुजार दी, और, परमात्मा के भजन में मैं नहीं लगा ॥१॥ विराम॥

जम को डंडु परिओ सिर ऊपरि तब सोवत तै जागिओ ॥

(मनुष्य माया की नींद में गाफिल पड़ा रहता है) जब यमदूत का डंडा (इसके) सिर पर पड़ता है, तब (माया के मोह की नींद से) सोता हुआ जागता है।

कहा होत अब कै पछुताए छूटत नाहिन भागिओ ॥१॥

पर उस समय के पछतावे से कुछ संवरता नहीं, (क्योंकि उस समय यम की ओर से) भागने में मुक्ति नहीं हो सकती ॥१॥

इह चिंता उपजी घट महि जब गुर चरनन अनुरागिओ ॥

जब मनुष्य गुरु के चरणों में प्रेम पाता है, तब उसके हृदय में यह खयाल उठता है (कि प्रभु के भजन के बिना उम्र व्यर्थ ही बीतती रही)।

सुफलु जनमु नानक तब हूआ जउ प्रभ जस महि पागिओ ॥२॥३॥

हे नानक! मनुष्य की ज़िंदगी कामयाब तब ही होती है जब (यह गुरु की शरण में जाकर) परमात्मा की स्तुति-प्रशंसा में लगता है ॥२॥३॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

ईश्वर एक है और सतगुरु की कृपा से मिलता है।

रागु बसंतु हिंडोल महला ९ ॥

राग बसंतु हिंडोल में गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

साधो इहु तनु मिथिआ जानउ ॥

हे संत जनो! इस शरीर को नाशवान समझो।

या भीतरि जो रामु बसतु है साचो ताहि पछानो ॥१॥ रहाउ ॥

इस शरीर में जो हरि निवास कर रहा है, (केवल) उसे सदा कायम रहने वाला जानो ॥१॥ विराम॥

इहु जगु है स्मपति सुपने की देखि कहा ऐडानो ॥

यह जगत उस धन-संपत्ति की तरह है जो सपने में मिल जाता है (और, जागने पर खत्म हो जाता है) (इस जगत के धन को) देखकर क्यों अहंकार करते हो?

संगि तिहारै कछू न चालै ताहि कहा लपटानो ॥१॥

यहाँ से कोई भी चीज़ (अंत समय में) तेरे साथ नहीं जा सकती। फिर इसके साथ क्यों लिपटा हुआ है? ॥१॥

उसतति निंदा दोऊ परहरि हरि कीरति उरि आनो ॥

किसी की खुशामद किसी की निंदा, ये दोनों काम छोड़ दे। केवल परमात्मा की स्तुति-प्रशंसा (अपने) हृदय में बसाओ।

जन नानक सभ ही मै पूरन एक पुरख भगवानो ॥२॥१॥

हे दास नानक! (कह कि हे मनुष्य!) केवल वह भगवान पुरुष ही (स्तुति-योग है जो) सभी जीवों में व्याप्त है ॥२॥१॥

बसंतु महला ९ ॥

राग बसंतु में गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

पापी हीऐ मै कामु बसाइ ॥

पापों में फंसाने वाली काम-वासना (मनुष्य के) हृदय में टिकी रहती है,

मनु चंचलु या ते गहिओ न जाइ ॥१॥ रहाउ ॥

इस लिये (मनुष्य का) चंचल मन काबू में नहीं आ सकता ॥१॥ विराम॥

जोगी जंगम अरु संनिआस ॥
योगी, जंगम और संन्यासी (जिन्होंने अपने द्वारा माया का) त्याग कर दिया है,

सभ ही परि डारी इह फास ॥१॥
इन सब पर ही (माया ने काम-वासना की) यह फांसी छोड़ दी है ॥१॥

जिहि जिहि हरि को नामु सम्हारि ॥
जिस-जिस मनुष्य ने परमात्मा का नाम अपने हृदय में बसाया है,

ते भव सागर उतरे पारि ॥२॥
वह सारे संसार-समुद्र (के विकारों) से पार हो जाते हैं ॥२॥

जन नानक हरि की सरनाइ ॥
हे नानक! परमात्मा का दास परमात्मा की शरण में रहता है,

दीजै नामु रहै गुन गाइ ॥३॥२॥
(परमात्मा के दर पर वह निवेदन करता रहता है कि हे प्रभु! अपने दास को अपना) नाम दे (ताकि तेरा दास तेरे) गुण गाता रहे (इस तरह वह काम विकृति विकारों की मार से बचा रहता है) ॥३॥२॥

बसंतु महला ९ ॥
राग बसंतु में गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

माई मै धनु पाइओ हरि नामु ॥
हे (मेरी) माँ! (जब गुरु की शरण में जाकर) मैंने परमात्मा का नाम-धन प्राप्त किया है,

मनु मेरो धावन ते छूटिओ करि बैठो बिसरामु ॥१॥ रहाउ ॥
मेरा मन (माया के लिए) भाग-दौड़ करने से बच गया है, (अब मेरा मन नाम-धन में) ठिकाना बनाकर बैठ गया है ॥१॥ विराम॥

माइआ ममता तन ते भागी उपजिओ निरमल गिआनु ॥
हे मेरी माँ! (गुरु की कृपा से मेरे अंदर) शुद्ध-सूरत परमात्मा के साथ गहरी निकटता बन गई है (जिसके कारण) मेरे शरीर में माया जोड़ने की लालसा दूर हो गई है।

लोभ मोह एह परसि न साकै गही भगति भगवान ॥१॥
(जब से मैंने) भगवान की भक्ति हृदय में बसाई है लोभ और मोह मुझ पर अपना जोर नहीं डाल सकते ॥१॥

जनम जनम का संसा चूका रतनु नामु जब पाइआ ॥

(हे मेरी माँ!) जब से (गुरु की कृपा से) मैंने परमात्मा का अमूल्य नाम खोज लिया है, मेरा जन्मों का भय दूर हो गया है।

त्रिसना सकल बिनासी मन ते निज सुख माहि समाइआ ॥२॥

मेरे मन से सारी तृष्णा समाप्त हो गई है, अब मैं उस आनंद में ठहरा रहता हूँ जो सदा मेरे साथ रहने वाला है ॥२॥

जा कउ होत दइआलु किरपा निधि सो गोबिंद गुन गावै ॥

(हे माँ!) कृपा का खजाना गोबिंद जिस मनुष्य पर दयालु होता है, वह मनुष्य उसके गुण गाता रहता है।

कहु नानक इह बिधि की स्मपै कोऊ गुरमुखि पावै ॥३॥३॥

नानक कहता है कि (हे माँ) कोई विरला मनुष्य इस किस्म का धन गुरु के सामने रहकर प्राप्त करता है ॥३॥३॥

बसंतु महला ९ ॥

राग बसंतु में गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

मन कहा बिसारिओ राम नामु ॥

हे मन! तू परमात्मा का नाम क्यों भूल बैठा है?

तनु बिनसै जम सिउ परै कामु ॥१॥ रहाउ ॥

(जब) शरीर नाश हो जाता है, (तब परमात्मा के नाम के बिना) यम के वश आता है ॥१॥ विराम॥

इहु जगु धूए का पहार ॥

हे मन! यह संसार (तो, मानो) धुएं का पर्वत है (जिसे हवा का एक झोंका उड़ा ले जाता है)।

तै साचा मानिआ किह बिचारि ॥१॥

हे मन! तू क्या समझकर (इस जगत को) सदा कायम रहने वाला मान बैठा है? ॥१॥

धनु दारा स्मपति ग्रेह ॥

हे मन! (अच्छी तरह समझ ले कि) धन, स्त्री, जायदाद, घर,

कछु संगि न चालै समझ लेह ॥२॥

इनमें से कोई भी चीज (मौत के समय जीव के) साथ नहीं जाती ॥२॥

इक भगति नाराइन होइ संगि ॥

सिर्फ परमात्मा की भक्ति ही मनुष्य के साथ रहती है।

कहु नानक भजु तिह एक रंगि ॥३॥४॥

(इस करके) नानक कहता है कि सिर्फ परमात्मा के प्यार में (टिक कर) उसका भजन किया कर ॥३॥४॥

बसंतु महला ९ ॥

राग बसंतु में गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

कहा भूलिओ रे झूठे लोभ लाग ॥

हे मनुष्य! नाशवान दुनिया के लोभ में फंसकर (हरि-नाम से) कहाँ खोया फिरता है?

कछु बिगरिओ नाहिन अजहु जाग ॥१॥ रहाउ ॥

अब सयाना बन, (और, परमात्मा का नाम जप) कर। यदि बाकी की उम्र स्मरण में गुजारें, तो भी तेरा कुछ बिगड़ नहीं गया है ॥१॥ विराम॥

सम सुपनै कै इहु जगु जानु ॥

इस जगत को सपनों (में देखे पदार्थों) के बराबर समझ।

बिनसै छिन मै साची मानु ॥१॥

यह बात सच मान कि (यह जगत) एक क्षण में नष्ट हो जाता है ॥१॥

संगि तेरै हरि बसत नीत ॥

(हे मित्र!) परमात्मा सदा तेरे साथ रहता है।

निस बासुर भजु ताहि मीत ॥२॥

तू दिन रात उसका ही भजन किया कर ॥२॥

बार अंत की होइ सहाइ ॥

आखिरी समय पर परमात्मा ही मददगार बनता है।

कहु नानक गुन ता के गाइ ॥३॥५॥

नानक कहता है (हे मनुष्य! तू सदा) उसके (हरि के) गुण गाया कर ॥३॥॥५॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

ईश्वर एक है और सच्चे गुरु की कृपा से मिलता है।

रागु सारंग महला ९ ॥
राग सारंग में गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

हरि बिनु तेरो को न सहाई ॥
परमात्मा के बिना तेरा (और) कोई भी सहायक नहीं है।

कां की मात पिता सुत बनिता को काहू को भाई ॥१॥ रहाउ ॥
कौन किसी की माँ? कौन किसी का पिता? कौन किसी का पुत्र? कौन किसी की बहू और (जब शरीर से साथ छूट जाता है तब) कौन किसी का भाई बनता है? (कोई नहीं) ॥१॥ विराम॥

धनु धरनी अरु स्मपति सगरी जो मानिओ अपनाई ॥
यह धन धरती सारी संपत्ति जिन्हें अपने समझी बैठा है,

तन छूटै कछु संगि न चालै कहा ताहि लपटाई ॥१॥
जब शरीर से साथ छूटता है, कोई चीज़ भी (जीव के) साथ नहीं चलती। फिर जीव क्यों इनसे चिपका रहता है? ॥१॥

दीन दइआल सदा दुख भंजन ता सिउ रुचि न बढाई ॥
जो प्रभु गरीबों पर दया करने वाला है, जो हमेशा (जीवों के) दुःखों का नाश करने वाला है, तू उसके साथ प्रेम नहीं बढ़ाता।

नानक कहत जगत सभ मिथिआ जिउ सुपना रैनाई ॥२॥१॥
नानक कहता है कि जैसे रात का सपना होता है वैसे ही सारा जगत नाशवान है ॥२॥१॥

सारंग महला ९ ॥
राग सारंग में गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

कहा मन बिखिआ सिउ लपटाही ॥
हे मन! तू क्यों माया के साथ (ही) चिपका रहता है?

या जग महि कोऊ रहनु न पावै इकि आवहि इकि जाही ॥१॥ रहाउ ॥
(देख) इस दुनिया में (सदा के लिए) कोई भी टिक नहीं सकता। कई जन्म लेते हैं, कई ही मरते हैं ॥१॥ विराम॥

कां को तनु धनु स्मपति कां की का सिउ नेहु लगाही ॥
(हे मन! देख) सदा के लिए न तो किसी का शरीर रहता है, न धन रहता है, न संपत्ति रहती है। तू किसके साथ प्यार बनाए बैठा है?

जो दीसै सो सगल बिनासै जिउ बादर की छाही ॥१॥

जैसे बादलों की छांव है, वैसे जो कुछ दिख रहा है सब नाशवान है ॥१॥

तजि अभिमानु सरणि संतन गहु मुकति होहि छिन माही ॥

(हे मन!) अहंकार छोड़, और, संत जनों की शरण पकड़। (इस तरह) एक पल में तू (माया के बंधनों से) स्वतंत्र हो जाएगा।

जन नानक भगवंत भजन बिनु सुखु सुपनै भी नाही ॥२॥२॥

हे दास नानक! परमात्मा के भजन के बिना कभी सपने में भी सुख नहीं मिलता ॥२॥२॥

सारंग महला ९ ॥

राग सारंग में गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

कहा नर अपनो जनमु गवावै ॥

पता नहीं मनुष्य क्यों अपना जीवन व्यर्थ बर्बाद करता है।

माइआ मदि बिखिआ रसि रचिओ राम सरनि नही आवै ॥१॥ रहाउ ॥

माया की मस्ती में मैया के स्वाद में उलझा रहता है, और, परमात्मा की शरण नहीं लेता ॥१॥ विराम॥

इहु संसारु सगल है सुपनो देखि कहा लोभावै ॥

यह सारा जगत सपने की तरह है, इसे देखकर, पता नहीं, मनुष्य क्यों लोभ में फंसता है।

जो उपजै सो सगल बिनासै रहनु न कोऊ पावै ॥१॥

यहां तो जो भी जन्म लेता है वह हर कोई नाश हो जाता है। यहां हमेशा के लिए कोई स्थायी नहीं रह सकता ॥१॥

मिथिआ तनु साचो करि मानिओ इह बिधि आपु बंधावै ॥

यह शरीर नाशवान है, पर जीव इसे हमेशा कायम रहने वाला समझता है, इस तरह अपने आप को (मोह के जाल में) फंसा रखता है।

जन नानक सोऊ जनु मुकता राम भजन चितु लावै ॥२॥३॥

हे दास नानक! वही मनुष्य मोह के बंधनों से स्वतंत्र रहता है, जो परमात्मा के भजन में अपना चित्त जोड़ी रखता है ॥२॥३॥

सारंग महला ९ ॥

राग सारंग में गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

मन करि कबहू न हरि गुन गाइओ ॥

मैंने मन लगाकर कभी भी हरि के गुण नहीं गाए।

Page 1232

बिखिआसकत रहिओ निसि बासुर कीनो अपनो भाइओ ॥१॥ रहाउ ॥

मैंने दिन-रात माया में ही मगन रहा, वही कुछ करता रहा, जो मुझे स्वयं को अच्छा लगता था ॥१॥ विराम॥

गुर उपदेसु सुनिओ नहि काननि पर दारा लपटाइओ ॥

(हे हरी!) मैंने कानों से गुरु की शिक्षा (कभी) नहीं सुनी, अन्य स्त्री के लिए काम-वासना रखता रहा।

पर निंदा कारनि बहु धावत समझिओ नह समझाइओ ॥१॥

दूसरों की निंदा करने के लिए बहुत दौड़-भाग करता रहा। समझाने से भी मैं (कभी) नहीं समझा (कि यह काम बुरा है) ॥१॥

कहा कहउ मै अपुनी करनी जिह बिधि जनमु गवाइओ ॥

हे हरी! जिस तरह मैंने अपना जीवन बेकार ही गवा लिया, वह मैं किस तक अपनी करतूत बताऊं?

कहि नानक सभ अउगन मो महि राखि लेहु सरनाइओ ॥२॥४॥३॥१३॥१३९॥४॥१५९॥

नानक कहता है कि हे प्रभू! मेरे अंदर सारे अवगुण ही हैं। मुझे अपनी शरण में रख
॥२॥४॥३॥१३॥१३९॥४॥१५९॥

Page 1352

ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

ईश्वर एक है, जिसका नाम अस्तित्व वाला' है जो सृष्टि का रचता है, जो सब में व्याप्त है, भय से रहित है, वैर रहित है, जिसका स्वरूप काल से परे है, (भाव, जिसका शरीर नाश रहित है), जो यूनो में नहीं आता, जिसका प्रकाश अपने आप से हुआ है और जो सतगुरु की कृपा से मिलता है।

रागु जैजावंती महला ९ ॥

राग जैजावंती में गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

रामु सिमरि रामु सिमरि इहै तेरै काजि है ॥

परमात्मा (के नाम का) स्मरण कर, परमात्मा के नाम का स्मरण कर! यह (स्मरण) ही तेरे काम में (आने वाला) है।

माइआ को संगु तिआगु प्रभ जू की सरनि लागु ॥

माया का मोह छोड़ दे, परमात्मा की शरण में रह।

जगत सुख मानु मिथिआ झूठो सभ साजु है ॥१॥ रहाउ ॥

दुनिया के सुखों को नाशवान समझो! जगत का यह सारा पसारा (ही) साथ छोड़ जाने वाला है ॥१॥ विराम॥

सुपने जिउ धनु पछानु काहे परि करत मानु ॥

इस धन को सपनों (में मिले पदार्थों) की तरह समझ, तू किस पर अहंकार करता है?

बारू की भीति जैसे बसुधा को राजु है ॥१॥

(सारी) धरती का राज (भी) रेत की दीवार जैसा है ॥१॥

नानकु जनु कहतु बात बिनसि जैहै तेरो गातु ॥

दास नानक (तेरे से) यह बात कहता है कि तेरा (तो यह अपना मिथ्या हुआ) शरीर (भी) नाश हो जाएगा।

छिनु छिनु करि गइओ कालु तैसे जातु आजु है ॥२॥१॥

(देख, जैसे तेरी उम्र का) कल (का दिन) छिन-छिन करके बीत गया है, वैसे आज (का दिन भी) गुजरता जा रहा है ॥२॥१॥

जैजावंती महला ९ ॥

राग जैजावंती में गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

रामु भजु रामु भजु जनमु सिरातु है ॥

परमात्मा का भजन किया कर, परमात्मा का भजन किया कर! मनुष्य का जन्म बीतता जा रहा है।

कहउ कहा बार बार समझत नह किउ गवार ॥

हे मूर्ख! मैं (तुझे) बार-बार क्या कहूँ? तू क्यों नहीं समझता?

बिनसत नह लगै बार ओरे सम गातु है ॥१॥ रहाउ ॥

(तेरा ये) शरीर (नाश होने में) ओले की तरह है (इसका) नाश होते क्षण नहीं लगता ॥१॥ विराम॥

सगल भरम डारि देहि गोबिंद को नामु लेहि ॥

सभी भ्रमों को छोड़ दे, परमात्मा का नाम जपा कर!

अंति बार संगि तेरै इहै एकु जातु है ॥१॥

अंत समय में तेरे साथ केवल यही नाम ही जाने वाला है ॥१॥

बिखिआ बिखु जिउ बिसारि प्रभ कौ जसु हीए धारि ॥

माया (का मोह अपने अंदर से) ज़हर की तरह निकाल दे! परमात्मा की स्तुति-प्रशंसा (अपने) हृदय में बसाई रख!

नानक जन कहि पुकारि अउसरु बिहातु है ॥२॥२॥

दास नानक (तुझे) कूक-कूक के कह रहा है, (मनुष्य जीवन का समय) बीतता जा रहा है ॥२॥२॥

जैजावंती महला ९ ॥

राग जैजावंती में गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

रे मन कउन गति होइ है तेरी ॥

हे मन! (सोच कि) तेरी कैसी दशा होगी?

इह जग महि राम नामु सो तउ नही सुनिओ कानि ॥

इस जगत में (तेरा अमल साथी) परमात्मा का नाम (ही) है, वो (नाम) तू कभी ध्यान से सुना नहीं।

बिखिअन सिउ अति लुभानि मति नाहिन फेरी ॥१॥ रहाउ ॥

तू विषयों में ही बहुत फंसा रहता है, तू (अपना) ध्यान (इनकी ओर) कभी पलटाता नहीं ॥१॥ विराम॥

मानस को जनमु लीनु सिमरनु नह निमख कीनु ॥

तू मनुष्य का जन्म (तो) हासिल किया, पर कभी रता भर समय के लिए भी परमात्मा का स्मरण नहीं किया।

दारा सुख भइओ दीनु पगहु परी बेरी ॥१॥

तू सदा स्त्री के सुखों के ही अधीन हो जाता है और तेरे पैरों में (स्त्री के मोह की) बेड़ी पड़ी रहती है ॥१॥

नानक जन कहि पुकारि सुपनै जिउ जग पसारु ॥

दास नानक (तुझसे) पुकार के कहता है कि यह जगत का खिलौना सपने जैसा ही है।

सिमरत नह किउ मुरारि माइआ जा की चेरी ॥२॥३॥

यह माया जिसकी दासी है तू उस परमात्मा का स्मरण क्यों नहीं करता ॥२॥३॥

जैजावंती महला ९ ॥

राग जैजावंती में गुरु तेग बहादुर जी की वाणी।

बीत जैहै बीत जैहै जनमु अकाजु रे ॥

जीवन का समय असफल गुजरता जा रहा है।

निसि दिनु सुनि कै पुरान समझत नह रे अजान ॥

हे मूर्ख! रात दिन पुरानी (अधिक पुस्तकों की) कहानियाँ सुनकर भी तू नहीं समझता।

कालु तउ पहूचिओ आनि कहा जैहै भाजि रे ॥१॥ रहाउ ॥

मृत्यु का समय तो नजदीक आ पहुँचा है। बता, तू इस तरफ से भागकर कहाँ जाएगा? ॥१॥ विराम॥

Page 1353

असथिरु जो मानिओ देह सो तउ तेरउ होइ है खेह ॥
जिस (अपने) शरीर को तू सदा कायम रहने वाला समझे बैठा है, तेरा वह (शरीर) तो (ज़रूर) जल जाएगा।

किउ न हरि को नामु लेहि मूरख निलाज रे ॥१॥
हे मूर्ख! हे बे-शर्म! तू क्यों परमात्मा का नाम नहीं जपता? ॥१॥

राम भगति हीए आनि छाडि दे तै मन को मानु ॥
(अपने) मन का अहंकार छोड़ दे, परमात्मा की भक्ति (अपने) हृदय में बसा ले!

नानक जन इह बखानि जग महि बिराजु रे ॥२॥४॥
दास नानक (तुझे बार-बार) यही बात कहता है कि ऐसा ही सुखमय जीवन जी! ॥२॥४॥

Page 1426

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
ईश्वर एक है और सतगुरु की कृपा से मिलता है।

सलोक महला ९ ॥
गुरु तेग बहादुर जी के श्लोक।

गुन गोबिंद गाइओ नही जनमु अकारथ कीनु ॥
यदि तू परमात्मा के गुणों का कभी गुणगान नहीं करता, तो तूने अपना मानव जन्म व्यर्थ कर लिया।

कहु नानक हरि भजु मना जिह बिधि जल कउ मीनु ॥१॥
नानक कहता है कि हे मन! परमात्मा का भजन किया कर (और, उसे इस तरह जीवन का आधार बना) जैसे पानी को मछली (अपनी जीविका का आधार बनाए रखती है) ॥१॥

बिखिअन सिउ काहे रचिओ निमख न होहि उदासु ॥
तू कुकर्मों के साथ क्यों (इतना) मस्त रहता है? तू आँख झपकने जितने समय के लिए भी विकारों से मन नहीं हटाता।

कहु नानक भजु हरि मना परै न जम की फासु ॥२॥
नानक कहता है कि हे मन! परमात्मा का भजन किया कर। (भजन के वरदान से) यम की फाँसी (गले में) नहीं पड़ती ॥२॥

तरनापो इउ ही गइओ लीओ जरा तनु जीति ॥
(तेरी) जवानी बेपरवाही में ही बीत गई, (अब) बुढ़ापे ने तेरे शरीर को जीत लिया है।

कहु नानक भजु हरि मना अउध जातु है बीति ॥३॥

नानक कहता है कि हे मन! परमात्मा का भजन किया कर। उम्र बीत रही है॥३॥

बिरधि भइओ सूझै नही कालु पहूचिओ आनि ॥

(देख, तू अब) बूढ़ा हो गया है (पर तुझे अभी भी यह) समझ नहीं आ रही कि मौत (सिर पर) आ पहुँची है।

कहु नानक नर बावरे किउ न भजै भगवानु ॥४॥

नानक कहता है कि हे मूर्ख मनुष्य! तू क्यों परमात्मा का भजन नहीं करता?॥४॥

धनु दारा स्मपति सगल जिनि अपुनी करि मानि ॥

(हे मनुष्य!) धन, स्त्री, संपत्ति (इन सब को) अपनी समझ कर ना मान!

इन मै कछु संगी नही नानक साची जानि ॥५॥

हे नानक! यह बात सच्ची समझ कि इन सभी में से कोई एक भी तेरा साथी नहीं बन सकता॥५॥

पतित उधारन भै हरन हरि अनाथ के नाथ ॥

प्रभू जी विकारों-भरे लोगों को विकारों से बचाने वाले हैं, सारे डर दूर करने वाले हैं, और अनाथ के मालिक (नाथ) हैं।

कहु नानक तिह जानीऐ सदा बसतु तुम साथि ॥६॥

नानक कहता है कि उसे (प्रभू) को (इस तरह) समझना चाहिए कि वह हमेशा तेरे साथ रहता है ॥६॥

तनु धनु जिह तो कउ दीओ तां सिउ नेहु न कीन ॥

जिस (परमात्मा) ने तुझे शरीर दिया, धन दिया, तू उससे प्रेम नहीं कर पाया,

कहु नानक नर बावरे अब किउ डोलत दीन ॥७॥

नानक कहता है कि हे बेवकूफ मनुष्य! अब दयनीय होकर घबराया क्यों फिरता है (अर्थात, उस हरि को याद करने के बिना घबराना तो होना ही है) ॥७॥

तनु धनु स्मपै सुख दीओ अरु जिह नीके धाम ॥

जिस (परमात्मा) ने शरीर दिया, धन दिया, संपत्ति दी, सुख दिए और सुंदर घर दिए,

कहु नानक सुनु रे मना सिमरत काहि न रामु ॥८॥

नानक कहता है कि हे मन! सुन, तू उस परमात्मा का स्मरण क्यों नहीं करता? ॥८॥

सभ सुख दाता रामु है दूसर नाहिन कोइ ॥

परमात्मा (ही) सारे सुख देने वाला है, (उसके बराबर का कोई दूसरा) नहीं है।

कहु नानक सुनि रे मना तिह सिमरत गति होइ ॥९॥

नानक कहता है कि हे मन! सुन, उसका (नाम) स्मरण करते हुए ऊँची आत्मिक अवस्था (भी) प्राप्त हो जाती है ॥९॥

जिह सिमरत गति पाईऐ तिह भजु रे तै मीत ॥

हे मित्र! तू उस परमात्मा की भक्ति किया कर, जिसका नाम स्मरण करते हुए ऊँची आत्मिक अवस्था प्राप्त होती है।

कहु नानक सुनु रे मना अउध घटत है नीत ॥१०॥

नानक कहता है कि हे मन! सुन, उम्र हमेशा घटती जा रही है (परमात्मा का स्मरण न भूल) ॥१०॥

पांच तत को तनु रचिओ जानहु चतुर सुजान ॥

हे चतुर मनुष्य! हे ज्ञानी मनुष्य! तुम जानते हो कि (तेरा यह) शरीर (परमात्मा ने) पांच तत्वों से बनाया है।

जिह ते उपजिओ नानका लीन ताहि मै मानु ॥११॥

हे नानक! (यह भी) यकीन जान कि जिन तत्वों से (यह शरीर) बना है (फिर) उन में ही लीन हो जाएगा (फिर इस शरीर के झूठे मोह में फंसकर परमात्मा का स्मरण क्यों भूल रहा है? ॥११॥

घट घट मै हरि जू बसै संतन कहिओ पुकारि ॥

संत जनों ने ऊंची कूक से बता दिया है कि परमात्मा हर एक शरीर में निवास कर रहा है।

कहु नानक तिह भजु मना भउ निधि उतरहि पारि ॥१२॥

नानक कहता है कि हे मन! तुम उसका (परमात्मा) का भजन किया करो, (भजन के वरदान से) संसार-सागर से तुम पार निकल जाओगे ॥१२॥

सुखु दुखु जिह परसै नही लोभु मोहु अभिमानु ॥

जिस मनुष्य (के हृदय) को सुख-दुख नहीं छू सकते, लोभ मोह अहंकार नहीं छू सकते (भाव, जो मनुष्य सुख-दुख समय आत्मिक जीवन से नहीं डोलता, जिस पर लोभ मोह अहंकार अपना जोर नहीं डाल सकते),

कहु नानक सुनु रे मना सो मूरति भगवान ॥१३॥

नानक कहता है कि हे मन! सुन, वह मनुष्य (साक्षात) परमात्मा का स्वरूप है ॥१३॥

उसतति निंदिआ नाहि जिहि कंचन लोह समानि ॥

जिस मनुष्य (के मन) को स्तुति नहीं (हिला सकती) निंदा नहीं (बिगाड़ सकती), जिसे सोना और लोहा एक जैसे (दिखते हैं, भाव, जो लालच में नहीं फंसता),

कहु नानक सुनि रे मना मुकति ताहि तै जानि ॥१४॥

नानक कहता है कि हे मन! सुन, यह बात (दृढ़) जान कि उसे मोह से छुटकारा मिल चुका है ॥१४॥

हरखु सोगु जा कै नही बैरी मीत समानि ॥

जिस मनुष्य के हृदय में खुशी-ग़म अपना जोर नहीं पा सकती, जिसको वैरी और मित्र एक जैसे (मित्र ही) लगते हैं,

कहु नानक सुनि रे मना मुकति ताहि तै जानि ॥१५॥

नानक कहता है कि हे मन! सुन, तू यह बात दृढ़ समझ ले कि उसे माया के मोह से मुक्ति मिल चुकी है ॥१५॥

भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन ॥

जो मनुष्य किसी को (कोई) डराता नहीं देता, और किसी के डराने पर विश्वास नहीं करता (डर से घबराता नहीं),

कहु नानक सुनि रे मना गिआनी ताहि बखानि ॥१६॥

नानक कहता है कि हे मन! सुन, उसे आत्मिक जीवन की सूझ वाला समझ ॥१६॥

जिहि बिखिआ सगली तजी लीओ भेख बैराग ॥

जिस (मनुष्य) ने (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, निंदा, ईर्ष्या, आदी अनेक रूपों वाली) सारी की सारी माया त्याग दी, (उसी ने ही सही) वैराग का (सही) वेष धारण किया (समझ)!

कहु नानक सुनु रे मना तिह नर माथै भागु ॥१७॥

नानक कहता है कि हे मन! सुन, उस मनुष्य के माथे पर (अच्छा) भाग (जागा) समझ! ॥१७॥

जिहि माइआ ममता तजी सभ ते भइओ उदासु ॥

जिस (मनुष्य) ने माया का मोह छोड़ दिया, (जो मनुष्य माया के दुष्ट काम आदि) सारे विकारों से निर्लिप्त हो गया,

कहु नानक सुनु रे मना तिह घटि ब्रहम निवासु ॥१८॥

नानक कहता है कि हे मन! सुन, उसके हृदय में (प्रत्यक्ष तौर पर) परमात्मा का निवास हो जाता है ॥१८॥

जिहि प्रानी हउमै तजी करता रामु पछानि ॥

जिस मनुष्य ने कर्तार सृष्टि के निर्माता के साथ गहरी निकटता बना कर (अपने अंदर से) अहंकार त्याग दिया,

कहु नानक वहु मुकति नरु इह मन साची मानु ॥१९॥

नानक कहता है कि हे मन! यह बात सच्ची समझ कि वह मनुष्य (ही) मुक्त है ॥१९॥

भै नासन दुरमति हरन कलि मै हरि को नामु ॥

इस क्लेशों-भरे संसार में परमात्मा का नाम (ही) सारे डर नाश करने वाला है, गलत बुद्धि को दूर करने वाला है।

निसि दिनु जो नानक भजै सफल होहि तिह काम ॥२०॥

हे नानक! जो मनुष्य प्रभू का नाम रात दिन जपता रहता है, उसके सारे काम पूरे हो जाते हैं ॥२०॥

जिहबा गुन गोबिंद भजहु करन सुनहु हरि नामु ॥

(अपनी) जीभ से परमात्मा के गुणों का जाप करो, (अपने) कानों से परमात्मा का नाम सुनो!

कहु नानक सुनि रे मना परहि न जम कै धाम ॥२१॥

नानक कहता है कि हे मन! (जो लोग नाम जपते हैं, वे) यम के वश में नहीं आते ॥२१॥

जो प्रानी ममता तजै लोभ मोह अहंकार ॥

जो मनुष्य (अपने अंदर से माया की) ममता को त्यागता है, लोभ मोह और अहंकार को दूर करता है,

कहु नानक आपन तरै अउरन लेत उधार ॥२२॥

नानक कहता है कि वह खुद (भी इस संसार-समुद्र से) पार चला जाता है और दूसरों को भी (विकारों से) बचा लेता है ॥२२॥

जिउ सुपना अरु पेखना ऐसे जग कउ जानि ॥

जैसे (सोते हुए) सपना (आता है) और (उस सपने में कई पदार्थ) देखे जाते हैं, वैसे इस जगत को समझो।

इन मै कछु साचो नही नानक बिनु भगवान ॥२३॥

हे नानक! परमात्मा के नाम के बिना (जगत में दिख रहे) इन (पदार्थों) में कोई भी पदार्थ सदा साथ निभाने वाला नहीं है ॥२३॥

निसि दिनु माइआ कारने प्रानी डोलत नीत ॥

(हे मनुष्य!) दौलत (इकट्ठा करने) के लिए (माया के कारण) मनुष्य सदा रात दिन भटकता फिरता है।

कोटन मै नानक कोऊ नाराइनु जिह चीति ॥२४॥

हे नानक! करोड़ों (बंदियों) में कोई विरला (ऐसा होता) है, जिसके मन में परमात्मा की याद टिकी होती है ॥२४॥

जैसे जल ते बुदबुदा उपजै बिनसै नीत ॥

जैसे पानी से बुलबुला सदा पैदा होता है और नष्ट होता रहता है,

जग रचना तैसे रची कहु नानक सुनि मीत ॥२५॥

नानक कहता है कि हे मित्र! सुन! वैसे ही (परमात्मा ने) जगत की (यह) खेल बनाई हुई है ॥२५॥

प्रानी कछू न चेतई मदि माइआ कै अंधु ॥

पर माया के नशे में (आत्मिक जीवन की ओर) अंधा हुआ मनुष्य (आत्मिक जीवन के बारे में) कुछ भी नहीं सोचता।

कहु नानक बिनु हरि भजन परत ताहि जम फंध ॥२६॥
नानक कहता है कि परमात्मा के भजन के बिना (ऐसे मनुष्य को) यम की फांसीं पड़ी रहती हैं ॥२६॥

जउ सुख कउ चाहै सदा सरनि राम की लेह ॥
यदि (मनुष्य) आत्मिक आनंद (हासिल करना) चाहता है, तो (उसको चाहिए कि) परमात्मा की शरण में रहे।

कहु नानक सुनि रे मना दुरलभ मानुख देह ॥२७॥
नानक कहते हैं कि हे मन! सुन! यह मनुष्य शरीर बड़ी मुश्किल से मिलता है (इसको माया की खातिर भटकने में ही नहीं खोना चाहिए) ॥२७॥

माइआ कारनि धावही मूरख लोग अजान ॥
मूर्ख बेसमझ लोग (निरंतर, माया के कारण) दौलत (इकट्ठा करने) के लिए भटकते रहते हैं,

कहु नानक बिनु हरि भजन बिरथा जनमु सिरान ॥२८॥
नानक कहते हैं कि परमात्मा के भजन के बिना (उनका यह मनुष्य) जन्म व्यर्थ गुजर रहा है ॥२८॥

जो प्रानी निसि दिनु भजै रूप राम तिह जानु ॥
जो मनुष्य रात दिन (हर समय परमात्मा का नाम) जपता रहता है, उसे परमात्मा का रूप समझो।

हरि जन हरि अंतरु नही नानक साची मानु ॥२९॥
हे नानक! यह बात सच्ची मानो कि परमात्मा के भक्त और परमात्मा में कोई फर्क नहीं है ॥२९॥

मनु माइआ मै फधि रहिओ बिसरिओ गोबिंद नामु ॥
(जिस इंसान का) मन (हर वक्त) माया (के मोह) में फंसा रहता है (जिसे) परमात्मा का नाम (सदा) भूल जाता है,

कहु नानक बिनु हरि भजन जीवन कउने काम ॥३०॥
नानक कहता है कि (बताओ) परमात्मा के भजन के बिना (उसका) जीना किस काम? ॥३०॥

प्रानी रामु न चेतई मदि माइआ कै अंधु ॥
माया के मोह में (फंसकर आत्मिक जीवन से) अंधा हुआ (जो) इंसान परमात्मा का नाम याद नहीं करता,

कहु नानक हरि भजन बिनु परत ताहि जम फंध ॥३१॥
नानक कहता है कि परमात्मा के भजन के बिना उसके (गले में) यम की फांसी पड़ी रहती हैं ॥३१॥

सुख मै बहु संगी भए दुख मै संगि न कोइ ॥

(दुनिया में तो) सुख के समय अनेक लोग मित्र बन जाते हैं, पर दुःख में कोई भी साथ नहीं होता।

कहु नानक हरि भजु मना अंति सहाई होइ ॥३२॥

नानक कहता है कि हे मन! परमात्मा का भजन किया कर (परमात्मा) अंत में (भी) मददगार बनता है ॥३२॥

जनम जनम भरमत फिरिओ मिटिओ न जम को त्रासु ॥

(परमात्मा का स्मरण भुलाकर जीव) अनेक जन्मों में भटकता रहता है, यम का डर (इसके अंदर से) मिटता नहीं।

कहु नानक हरि भजु मना निरभै पावहि बासु ॥३३॥

नानक कहता है कि हे मन! परमात्मा का भजन करता रह, (भजन के वरदान से) तू उस प्रभु में निवास प्राप्त कर लेगा जिसको कोई डर छू नहीं सकता ॥३३॥

जतन बहुतु मै करि रहिओ मिटिओ न मन को मानु ॥

हे भगवान! मैंने अनेक (और-और) प्रयास कर लिये हैं (उन प्रयासों से) मन का अहंकार दूर नहीं होता,

दुरमति सिउ नानक फधिओ राखि लेहु भगवान ॥३४॥

नानक का (यह मन) नाकाम बुद्धि में लगा ही रहता है। हे भगवान! (तू खुद ही) रक्षा कर! ॥३४॥

बाल जुआनी अरु बिरधि फुनि तीनि अवसथा जानि ॥

बाल अवस्था, जवानी की अवस्था, और फिर बूढ़े होने की अवस्था, (उम्र की ये) तीन अवस्थाएँ समझ ले (जो मनुष्य पर आती हैं)।

कहु नानक हरि भजन बिनु बिरथा सभ ही मानु ॥३५॥

नानक कहता है कि (पर यह) याद रख (कि) परमात्मा के भजन के बिना ये सारी ही व्यर्थ जाती हैं॥३५॥

करणो हुतो सु ना कीओ परिओ लोभ कै फंध ॥

(माया के मोह में) अंधे हो रहे हे मनुष्य! जो कुछ तू करना था, वह तू नहीं किया (सारी उम्र) तू लोभ की फाँसी में (ही) फंसा रहा।

नानक समिओ रमि गइओ अब किउ रोवत अंध ॥३६॥

हे नानक! (जिन्दगी का सारा) समय (इसी तरह ही) गुजर गया। अब क्यों रोता है? (अब पछताने का क्या लाभ? ॥३६॥

मनु माइआ मै रमि रहिओ निकसत नाहिन मीत ॥

हे मित्र! जो मन माया (के मोह) में फंस जाता है, (वह इस मोह से) अपने आप नहीं निकल सकता,

नानक मूरति चित्र जिउ छाडित नाहिन भीति ॥३७॥

हे नानक! जैसे (कंधे पर किसी) मूर्ति का कुरेदा हुआ रूप कंधे को नहीं छोड़ता कंधे से चिपका रहता है॥३७॥

नर चाहत कछु अउर अउरै की अउरै भई ॥

(माया के मोह में फंस कर) मनुष्य (प्रभु-स्मरण के बजाए) कुछ और ही (अर्थात, दौलत ही दौलत) मांगता रहता है। (पर कर्तार की रजा में) और की और हो जाती है।

चितवत रहिओ ठगउर नानक फासी गलि परी ॥३८॥

हे नानक! (मनुष्य दूसरों को) ठगने की सोचता है (उधर से मौत की) फाँसी गले में आ पड़ती है॥३८॥

जतन बहुत सुख के कीए दुख को कीओ न कोइ ॥

(जीव बेशक) सुखों (की प्राप्ति) के लिए अनेक प्रयास करता है, और दुखों के लिए प्रयास नहीं करता (पर फिर भी रज़ा के अनुसार दुख भी आ ही जाते हैं।

कहु नानक सुनि रे मना हरि भावै सो होइ ॥३९॥

सुख भी तभी मिलता है जब भगवान की रज़ा हो) नानक कहता है कि हे मन! जो कुछ परमात्मा को अच्छा लगता है (ज़रूर) वही (ही) होता है ॥३९॥

जगतु भिखारी फिरतु है सभ को दाता रामु ॥

जगत भिखारी (होकर) भटकता फिरता है (यह याद नहीं रखता कि) सारे जीवों को वस्तु देने वाला परमात्मा स्वयं है।

कहु नानक मन सिमरु तिह पूरन होवहि काम ॥४०॥

नानक कहता है कि हे मन! उस दाता भगवान का स्मरण करता रह, तेरे सारे काम सफल होते रहेंगे ॥४०॥

झूठै मानु कहा करै जगु सुपने जिउ जानु ॥

(पता नहीं मनुष्य) नाशवान दुनिया का मान क्यों करता रहता है। जगत को सपनों (में देखे पदार्थों) की तरह (ही) समझ रख!

इन मै कछु तेरो नही नानक कहिओ बखानि ॥४१॥

(हे मनुष्य!) (मैं) नानक तुझे ठीक बता रहा हूँ कि इन (दिखने वाले पदार्थों) में तेरा (असली साथी) कोई भी पदार्थ नहीं है ॥४१॥

गरबु करतु है देह को बिनसै छिन मै मीत ॥

हे मित्र! (जिस) शरीर का (मनुष्य सदा) मान करता रहता है (कि यह मेरा अपना है, वह शरीर) एक क्षण में ही नाश हो जाता है। (और पदार्थ का मोह तो कहीं रहा, अपने इस शरीर का मोह भी झूठा ही है)।

जिहि प्रानी हरि जसु कहिओ नानक तिहि जगु जीति ॥४२॥

हे नानक! जिस मनुष्य ने परमात्मा की महिमा करनी शुरू कर दी, उसने जगत (के मोह) को जीत लिया ॥४२॥

जिह घटि सिमरनु राम को सो नरु मुकता जानु ॥

जिस मनुष्य के हृदय में परमात्मा का स्मरण (टिका रहता है) उसे (मोह के जाल से) बचा हुआ समझो।

तिहि नर हरि अंतरु नही नानक साची मानु ॥४३॥

हे नानक! यह बात सही मानो कि उस मनुष्य और परमात्मा में कोई फर्क नहीं है ॥४३॥

एक भगति भगवान जिह प्रानी कै नाहि मनि ॥

जिस मनुष्य के मन में परमात्मा की भक्ति नहीं है,

जैसे सूकर सुआन नानक मानो ताहि तनु ॥४४॥

हे नानक! उसका शरीर वैसा ही समझो जैसे किसी सुअर का शरीर है (या किसी) कुत्ते का शरीर है ॥४४॥

सुआमी को ग्रिहु जिउ सदा सुआन तजत नही नित ॥

जैसे कुत्ता (अपने) मालिक के घर (घर के दरवाजे) को हमेशा (अपना बना रखता है) कभी भी नहीं छोड़ता है,

नानक इह बिधि हरि भजउ इक मनि हुइ इक चिति ॥४५॥

हे नानक! इस प्रकार एक मन और एक हृदय से प्रभु की भक्ति करो (ताकि उनका द्वार कभी न छूटे)। ||45||

तीरथ बरत अरु दान करि मन मै धरै गुमानु ॥

(परमात्मा का भजन छोड़कर मनुष्य) तीर्थ-स्नान करके व्रत रख कर, दान-पुण्य करके (अपने) मन में अहंकार करता है (कि मैं धर्मी बन गया हूँ),

नानक निहफल जात तिह जिउ कुंचर इसनानु ॥४६॥

(पर) हे नानक! उसके (ये सभी किए हुए कर्म इस तरह) व्यर्थ (चले जाते हैं) जैसे हाथी का (किया हुआ) स्नान। (नोट: हाथी नहा के सूखी मिट्टी अपने ऊपर पा लेता है) ॥४६॥

सिरु कमपिओ पग डगमगे नैन जोति ते हीन ॥

(बुढ़ापे में जब इंसान का) सिर कांपने लग जाता है (चलते हुए) पैर थिरकते हैं, आंखों की ज्योति मारी जाती है,

कहु नानक इह बिधि भई तऊ न हरि रसि लीन ॥४७॥

नानक कहते हैं कि (बुढ़ापे के साथ शरीर की) यह हालत हो जाती है, फिर भी (माया का मोह इतना प्रबल होता है कि इंसान) परमात्मा के नाम के स्वाद में मगन नहीं होता ॥४७॥

निज करि देखिओ जगतु मै को काहू को नाहि ॥

मैं जगत को अपनी समझकर (ही अब तक) देखता रहा, (पर यहाँ) कोई भी किसी का (हमेशा के लिए अपना) नहीं है।

नानक थिरु हरि भगति है तिह राखो मन माहि ॥४८॥

हे नानक! हमेशा कायम रहने वाली तो परमात्मा की भक्ति (ही) है। इस (भक्ति) को (अपने) मन में प्रगट रख! ॥४८॥

जग रचना सभ झूठ है जानि लेहु रे मीत ॥

हे मित्र! यह बात सच्ची जान कि जगत की सारी रचना नाशवान है।

कहि नानक थिरु ना रहै जिउ बालू की भीति ॥४९॥

नानक कहते हैं कि रेत की दीवार की तरह (जगत में) कोई भी चीज हमेशा कायम रहने वाली नहीं है ॥४९॥

रामु गइओ रावनु गइओ जा कउ बहु परवारु ॥

(देख! श्री) राम (-चंद्र) कूच कर गए, रावण भी चला गया जिसको बड़े परिवार वाला कहा जाता है।

कहु नानक थिरु कछु नही सुपने जिउ संसारु ॥५०॥

नानक कहते हैं कि (यहाँ) कोई भी हमेशा कायम रहने वाला पदार्थ नहीं है। (यह) जगत सपना जैसा (ही) है ॥५०॥

चिंता ता की कीजीऐ जो अनहोनी होइ ॥

(मौत आदि तो) उस (घटना) की चिंता करनी चाहिए जो कभी होने वाली न हो।

इहु मारगु संसार को नानक थिरु नही कोइ ॥५१॥

हे नानक! जगत की तो चाल ही यह है कि (यहाँ) कोई जीव (भी) हमेशा कायम रहने वाला नहीं है ॥५१॥

जो उपजिओ सो बिनसि है परो आजु कै कालि ॥

(दुनिया में) जो भी पैदा हुआ है, वह (जरूर) नाश हो जाएगा (हर कोई यहाँ से) आज या कल जाने वाला है।

नानक हरि गुन गाइ ले छाडि सगल जंजाल ॥५२॥

हे नानक! (इसके लिए माया के मोह के) सारे जंजाल तोड़कर परमात्मा के गुण गाया कर! ॥५२॥

दोहरा ॥

दोहरा ॥

बलु छुटकिओ बंधन परे कछू न होत उपाइ ॥

(प्रभु के नाम से अलग हुई जब माया के मोह के) जंजाल (मनुष्य को) आ पड़ते हैं (उन्हें काटने के लिए मनुष्य के अंदर से आत्मिक) शक्ति खत्म हो जाती है (माया का टकराव करने के लिए मनुष्य की ओर से) कोई भी उपाय नहीं किया जा सकता।

कहु नानक अब ओट हरि गज जिउ होहु सहाइ ॥५३॥

नानक कहता है कि हे हरि! इस समय (अब) तेरा ही सहारा है। जैसे तू (तेंदुए से छुड़ाने के लिए) हाथी का सहायक बना, वैसे ही सहायक बन! (अर्थात, माया के मोह के बंधनों से मुक्ति पाने के लिए परमात्मा के दर पर अरदास ही एकमात्र उपाय है) ॥५३॥

बलु होआ बंधन छुटे सभु किछु होत उपाइ ॥

(जब मनुष्य प्रभु के दर पर गिरता है, तब माया का टकराव करने के लिए उसके अंदर आत्मिक) बल पैदा हो जाता है (माया के मोह के) बंधन टूट जाते हैं (मोह का टकराव करने के लिए) हर उपाय सफल हो सकता है।

नानक सभु किछु तुमरै हाथ मै तुम ही होत सहाइ ॥५४॥

तो, हे नानक कहता है कि (हे प्रभू!) सब कुछ तेरे हाथ में है (तेरी पैदा की हुई माया भी तेरे ही अधीन है, इससे बचने के लिए) तू ही मददगार हो सकता है ॥५४॥

संग सखा सभि तजि गए कोऊ न निबहिओ साथि ॥

(जब अंत के समय) सभी साथी और संगी छोड़ जाते हैं, जब कोई भी साथी नहीं रह जाता,

कहु नानक इह बिपति मै टेक एक रघुनाथ ॥५५॥

नानक कहते हैं कि उस (अकेलेपन की) मुसीबत के समय भी केवल परमात्मा का ही सहारा होता है (इसलिए, हमेशा परमात्मा का नाम स्मरण करो) ॥५५॥

नामु रहिओ साधू रहिओ रहिओ गुरु गोबिंदु ॥

(अंत के समय भी परमात्मा का) नाम (जीव के साथ) रहता है, (वाणी के रूप में) गुरु उसके साथ रहता है, ईश्वर उसके साथ है,

कहु नानक इह जगत मै किन जपिओ गुर मंतु ॥५६॥

नानक कहते हैं कि इस दुनिया में जिसने (हरि नाम स्मरण करने वाला) गुरु का उपदेश अपने अंदर हमेशा रखा है (और नाम जपा है, वह अंत के समय सहायक बनता है) ॥५६॥

राम नामु उर मै गहिओ जा कै सम नही कोइ ॥

हे प्रभु! जिस मनुष्य ने तेरा वह नाम अपने हृदय में बसा लिया है जिसका बराबर का और कुछ नहीं है,

जिह सिमरत संकट मिटै दरसु तुहारो होइ ॥५७॥१॥

और जिसे स्मरण करते ही हर एक दुख-क्लेश दूर हो जाता है, उस मनुष्य को तेरा दर्शन भी हो जाता है ॥५७॥१॥